

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी।

03 दीपक की लौ और नियति का खेल: राजा भद्रावर की कथा!

06 मौन स्मरण: आपका मस्तिष्क तब भी याद रखता है जब आप भूल जाते हैं

08 रास चुनाव में शारदा नायक के वोट पर नजर!

दिल्ली में डीटीसी बस ने ई-रिक्शा और स्कूटर को मारी टक्कर, गुस्साए लोगों ने लगाई आग

बाहरी दिल्ली के नांगलोई-नजफगढ़ रोड पर सोमवार को एक डीटीसी बस ने कथित तौर पर ई-रिक्शा और स्कूटर को टक्कर मार दी। इस हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। हादसे के बाद गुस्साए स्थानीय लोगों ने डीटीसी बस में आग लगा दी और कई अन्य बसों को भी क्षतिग्रस्त कर दिया।



संजय कुमार बाठला

नई दिल्ली। दिल्ली में सोमवार को नांगलोई-नजफगढ़ रोड एक भीषण हादसा हो गया। जहां एक डीटीसी बस ने कथित तौर पर एक ई-रिक्शा और स्कूटर को टक्कर मार दी। इस हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, मृतकों में ई-रिक्शा और स्कूटर में सवार लोग शामिल हैं। इस घटना के बाद लोगों ने गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने बस में आग लगा दी, जिससे इलाके में

अफरातफरी मच गई। गुस्साई भीड़ ने दूसरी बसों को भी किया क्षतिग्रस्त बताया जा रहा है कि डीटीसी बस को आग के हवाले करने के बाद भी डीटीसी बस शांत नहीं हुआ। उन्होंने कई दूसरी बसों को भी रुकवाया और उनमें तोड़फोड़ करनी शुरू कर दी। गुस्साए लोगों ने करीब 3 से 4 बसों के शीशों को तोड़ दिया। इस घटना के बाद इलाके में तनावपूर्ण माहौल हो गया। घटना की

जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को काबू में किया। इलाके में अब काबू में हालात पुलिस ने लोगों को समझाने का प्रयास किया और उन्हें आशवासन दिया कि टक्कर मारने वाली बस के चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसके बाद लोगों का गुस्सा शांत हुआ। वहीं बस में लगी आग को बुझाने के लिए दमकल की टीम भी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया गया। दिल्ली

अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के अनुसार, बस में आग लगने की सूचना सुबह करीब 10 बजे मिली थी। मौके पर पहुंची टीम ने देखा कि बस पूरी तरह आग की लपटों से घिरी है। दमकल कर्मियों ने तुरंत आग बुझाने का काम शुरू किया। करीब 11 बजे तक आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया। हादसे के बाद इलाके में पुलिस बल को तैनात किया गया। फिलहाल क्षेत्र में शांति बनी हुई है। पुलिस इस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है।

एनएचएआई ने राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए पहली वार्षिक 'हरित आवरण सूचकांक' रिपोर्ट जारी की

संगिनी घोष,

National Highways Authority of India (एनएचएआई) ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों पर पहली वार्षिक 'हरित आवरण सूचकांक' (NH-GCI) रिपोर्ट जारी की है। यह पहल राजमार्गों के आसपास हरित क्षेत्र की स्थिति का आकलन करने और पर्यावरणीय संतुलन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य देशभर के राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे मौजूद हरित आवरण की निगरानी करना और उसके स्तर का मूल्यांकन करना है। इसके माध्यम से वृक्षारोपण और हरित विकास से जुड़े प्रयासों को और बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।

NH-GCI के माध्यम से राजमार्गों के किनारे मौजूद हरियाली और पौधारोपण



की स्थिति को मापा जाएगा, जिससे उन क्षेत्रों की पहचान की जा सकेगी जहां हरित आवरण बढ़ाने की आवश्यकता है। इससे भविष्य की राजमार्ग परियोजनाओं में पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए बेहतर योजना बनाई जा सकेगी। यह पहल देश में सतत और पर्यावरण-

अनुकूल अवसर विकास को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। ऐसे देखें तो 'हरित आवरण सूचकांक' यह दर्शाता है कि अब अवसर विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी समान महत्व दिया जा रहा है।

मुख्य बिंदु

* एनएचएआई ने राष्ट्रीय राजमार्ग हरित आवरण सूचकांक (NH-GCI) की पहली वार्षिक रिपोर्ट जारी की
* रिपोर्ट वर्ष 2025-26 के लिए तैयार की गई
* राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे हरित आवरण की निगरानी और मूल्यांकन
* वृक्षारोपण और हरियाली बढ़ाने के क्षेत्रों की पहचान में मदद
* पर्यावरण-अनुकूल अवसर विकास को बढ़ावा

SEO Meta Description:
एनएचएआई ने 2025-26 के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों पर पहली 'हरित आवरण सूचकांक (NH-GCI)' रिपोर्ट जारी की, जिसका उद्देश्य राजमार्गों के किनारे हरियाली की निगरानी और पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा देना है।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
<https://tolwa.com/about.html> | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिंकी कुड्ड

निवेश धोखाधड़ी का बदला चहरा - पढ़े लिखे को फंसाने का जाल
एआई डीपफेक अब धोखाधड़ी का नया हथियार है।
- क्लोन वेबसाइट और ब्राइंडिंग: असली बैंक/ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म की हबू नकल कर नकली वेबसाइट बनाई जाती है।
- एआई डीपफेक वीडियो और आवाजें: नेताओं, अधिकारियों या वित्तीय विशेषज्ञों की नकली वीडियो/ऑडियो बनाकर भरोसा दिलाया जाता है।
- सोशल मीडिया विज्ञापन: फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम पर भारी मुनाफे का लालच देकर ऐप डाउनलोड करवाया जाता है।
- फर्जी डेशबोर्ड: निवेश करने पर नकली मुनाफा दिखाया जाता है ताकि लोग और पैसा लगाएँ।
- दबाव और लालच: "अभी निवेश करें वरना मौका हाथ से निकल जाएगा" जैसी बातें कर तुरंत पैसे ट्रांसफर करवाए जाते

हैं।
हाल के वास्तविक मामले
- डीपफेक वीडियो (2026): वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण का नकली एआई वीडियो बनाकर नागरिकों को एक ट्रेडिंग ऐप में निवेश करने के लिए उकसाया गया। PIB ने इसे फर्जी घोषित किया।
- फरीदाबाद महिला (₹7 करोड़ का नुकसान): फेसबुक विज्ञापन से प्रचारित नकली ट्रेडिंग ऐप में निवेश कर भारी नुकसान।
• नोएडा व्यापारी (₹9 करोड़ का नुकसान): क्लोन वेबसाइट और व्हाट्सएप कॉल पर एआई आवाज वाले "सलाहकारों" से धोखा।
• बटिंडा डॉक्टर (₹6 करोड़ का नुकसान): नकली डेशबोर्ड पर दिखाए गए झूठे मुनाफे से प्रभावित होकर निवेश किया।
• अंतरराष्ट्रीय उदाहरण (फ्लोरिडा, USA): गोल्ड बुलियन एक्सचेंज स्कैम में निवेशकों से करोड़ों डॉलर लिए गए, पर असल में कोई निवेश नहीं हुआ।
लोग कैसे तय करें हैं
- प्राथमिक व्यक्तियों पर भरोसा: मंत्री या अधिकारी का चेहरा देखकर लोग विश्वास कर लेते हैं।
- परिचित लोगो और ब्राइंडिंग: असली जैसी वेबसाइट देखकर



भरोसा बढ़ता है।
- लालच और जल्दबाजी: भारी मुनाफे का दावा कर तुरंत निवेश करने का दबाव।
- एआई की वास्तविकता: डीपफेक तकनीक से असली और नकली में फर्क करना कठिन।
बचाव के उपाय
- आधिकारिक स्रोत जाँचें:

PIB फैक्ट-चेक, SEBI और RBI की चेतावनियाँ देखें।
- URL और ऐप की जाँच करें: केवल आधिकारिक ऐप स्टोर या सत्यापित डोमेन से डाउनलोड करें।
- अवास्तविक लाभ पर संदेह करें: कुछ ही दिनों में तीन गुना पैसा कमाने का दावा हमेशा

धोखा है।
- कॉलर की पहचान सुनिश्चित करें: केवल आधिकारिक हेल्पलाइन से पुष्टि करें।
- तुरंत रिपोर्ट करें: राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) या 1930 पर शिकायत दर्ज करें।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान
"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है, अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
<https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा के जनहित कार्यों को समर्पित



सड़क सुरक्षा



महिला सुरक्षा



प्रदूषण



साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है, तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुल्क आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001



आवेदन प्रक्रिया

<https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

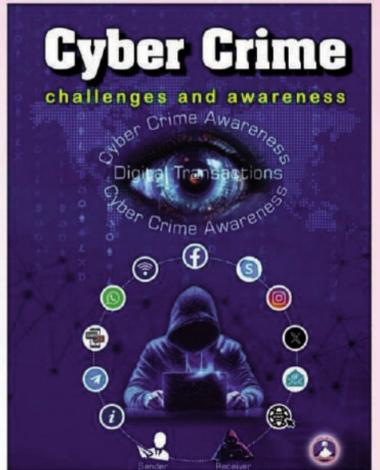
डिजिटल हेल्थ चेक-अप : प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा दिनचर्या 'डिजिटल हेल्थ चेक-अप करें: परिवार और डेटा दोनों सुरक्षित रखें।'



इंस्पेक्टर रणज कुमार सिंह (साइबर क्राइम अन्वेषक)

आज की डिजिटल दुनिया में हमारी ऑनलाइन पहचान और डेटा उनसे ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि हमारा शारीरिक स्वास्थ्य। जैसे हम नियमित रूप से मेडिकल हेल्थ चेक-अप करवाते हैं, वैसे ही डिजिटल हेल्थ चेक-अप भी जरूरी है ताकि हम साइबर खतरों से सुरक्षित रह सकें। यह लेख पाँच महत्वपूर्ण जाँचों पर केंद्रित है जिन्हें हर व्यक्ति को अपनी डिजिटल

सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनाना चाहिए।
1) ईमेल सुरक्षा जाँच
आपका ईमेल आईडी आपकी डिजिटल दुनिया का प्रवेश द्वार है।
-haveibeenpwned.com पर जाकर देखें कि आपका ईमेल किसी डेटा लीक में शामिल है या नहीं।
-यदि पाया जाता है, तो तुरंत पासवर्ड बदलें।
-टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA/MFA) सक्रिय करें। यह कदम आपके ईमेल को अनधिकृत पहुँच से सुरक्षित रखता है।
2) सिम कार्ड सत्यापन (Sanchar Saathi - TAF COP) अक्सर धोखेबाज किसी और के नाम पर मोबाइल कनेक्शन का दुरुपयोग करते हैं।
-www.sancharsaathi.gov.in (sancharsaathi.gov.in in Bing) पर जाईं और "Know Your Mobile Connections" पर क्लिक करें।
-मोबाइल नंबर खाले, ओटीपी से सत्यापन करें और देखें कि आपके नाम पर कितने सिम सक्रिय हैं।
-किसी अनजान सिम को तुरंत रिपोर्ट या डिस्कनेक्ट करें।
हमेशा सरकारी पोर्टल का ही उपयोग करें।
3) आधार बायोमेट्रिक्स लॉक स्थिति
आपके फिंगरप्रिंट और आईरिज आपके सबसे महत्वपूर्ण पहचान हैं।
UIDAI.gov.in ? My Aadhaar ? Lock/Unlock Biometrics पर जाईं।
-ओटीपी से लॉगिन कर देखें कि बायोमेट्रिक्स लॉक है या नहीं।
-लॉक करने से आपके बायोमेट्रिक्स का दुरुपयोग नहीं हो सकता।
इन्हें केवल जरूरत पड़ने पर ही अनलॉक करें।
4) WhatsApp सुरक्षा
भारत में करोड़ों लोग WhatsApp का उपयोग करते हैं, जिससे यह धोखाधड़ी का आसान लक्ष्य बन जाता है।
-Two-Step Verification सक्रिय करें।
-ऐप को हमेशा अपडेटेड रखें।
-संदिग्ध लिंक या अटैचमेंट पर क्लिक न करें।



-Linked Devices की जाँच करें और अनजान डिवाइस हटाएँ।
-Block & Report का उपयोग करें।
वे उपाय आपकी बातचीत को सुरक्षित रखते हैं।
5) फ़िरे हुए ऐस और स्पॉन्सर्ड ऐस की जाँच
अनचाहे APK या स्पॉन्सर्ड ऐस आपके डेटा पर नज़र रख सकते हैं।
-Settings > Apps ? All Apps में जाकर इंस्टॉल किए गए ऐस देखें।
-Permissions जाँचें और संदिग्ध ऐस हटाएँ।
-Device Admin Apps से अनावश्यक अनुमति हटाएँ।
-बैटरी/डेटा उपयोग पर नज़र रखें।
-Play Protect Scan चलाएँ।
-Unknown Sources बंद करें और केवल भरोसेमंद ऐस से इंस्टॉल करें।
-यह डिजिटल हेल्थ चेक-अप किट आपको साइबर सुरक्षा की खाल है। इन पाँच जाँचों को अपनाकर आप न केवल खुद को बल्कि अपने परिवार, मित्रों और सहकर्मियों को भी सुरक्षित रख सकते हैं। डिजिटल सुरक्षा सामूहिक जिम्मेदारी है-इसे साझा करें और अपनाएँ।
लेखक को साइबर अपराध मामलों की जाँच का व्यापक अनुभव है। उन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक और नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट से साइबर कानून में डिप्लोमा प्राप्त किया है।

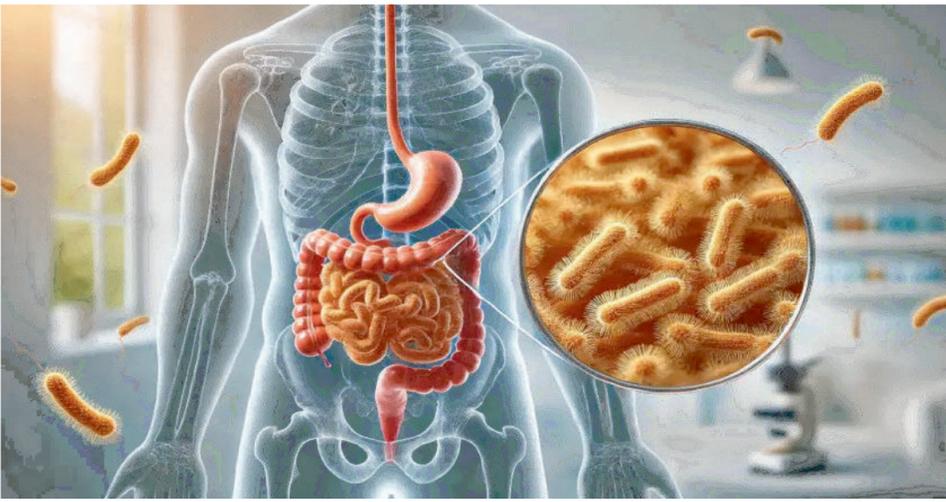
क्या है स्मॉल इंटेस्टाइनल बैक्टीरियल और कैसे करे बचाव

पिकी कुंज

हाल की स्टडीज़ से पता चला है कि बहुत से लोगों को हल्का या भारी खाना खाने के बाद पेट फूलना और कब्ज जैसी पाचन की दिक्कतें होती हैं। डॉक्टरों का कहना है कि ऐसी परेशानी का मुख्य कारण SIBO (स्मॉल इंटेस्टाइनल बैक्टीरियल ओवरग्रोथ) है।

SIBO तब होता है जब बड़ी आंत के बैक्टीरिया छोटी आंत में बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं। छोटी आंत खाना पचाने, न्यूट्रिएंट्स सोखने और खाने को आगे बढ़ाने जैसे काम करती है। छोटी आंत में ज्यादा बैक्टीरिया होने से खाना ज्यादा फर्मेंट होता है। शरीर को न्यूट्रिएंट्स नहीं मिल पाते। बहुत ज्यादा गैस बनती है। इससे पेट फूलना, पॉंटी में बदलाव, पेट दर्द, थकान, पेट बड़ा होना, गैस, कब्ज, डायरिया, कम खाने पर भी पेट भरा हुआ महसूस होना और न्यूट्रिशन की कमी जैसे लक्षण हो सकते हैं। इसके अलावा, कुछ मामलों में ब्रेन फॉग, एंजायटी और स्किन प्रॉब्लम जैसे लक्षण भी हो सकते हैं। अब, SIBO के कारण जानते हैं।

कारण क्रोनिक स्ट्रेस, डायबिटीज, हाइपोथायरॉइडिज्म,



उम्र बढ़ने और इन्फेक्शन से पाचन क्षमता कम हो सकती है। इससे खाना या बैक्टीरिया छोटी आंत में फंस सकते हैं। PPIs का लंबे समय तक इस्तेमाल, उम्र बढ़ने या जिंक की कमी से पेट का एसिड कम हो सकता है। एसिड की कमी के कारण बैक्टीरिया बिना मरे छोटी आंत में जा सकते हैं। साथ ही, अगर बाइल या एंजाइम का फ्लो कम होता है, तो

खाना अधूरा पचता है। इससे बैक्टीरिया और बढ़ सकते हैं। पुरानी सर्जरी, IBS या डायबेटिकला जैसी समस्याएं छोटी आंत में बैक्टीरिया को फंसा सकती हैं। SIBO का पता सांस की जांच से लगाया जाता है। इसमें व्यक्ति को ग्लूकोज मिला घोल पीने के लिए दिया जाता है। थोड़ी देर बाद, सांस के सैंपल लेकर उनकी जांच की जाती है।

क्या करें SIBO से परेशान लोगों को कभी-कभी लगता है कि प्रोबायोटिक्स लेने से उनके लक्षण और बिगड़ सकते हैं। इसलिए, खाने में पाबंदी, फर्मेंटेशन कम करना, पेट के एसिड में सुधार, एंजाइम और बाइल का सही लेवल बनाए रखना, बैक्टीरिया की ओवरग्रोथ को कम करने के लिए हर्बल या फार्मास्युटिकल

एंटीमाइक्रोबियल का इस्तेमाल करना, पाचन क्रिया को ठीक करना और पाचन की परत को मजबूत करने पर विचार करना चाहिए। SIBO के कम होने के बाद ही प्रोबायोटिक्स का इस्तेमाल करना सबसे अच्छा है। डॉक्टरों का कहना है कि सही उपाय करने और बेहतर इलाज से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

नाखूना (Nakhuna) — एक पारंपरिक औषधीय जड़ी-बूटी



पिकी कुंज

नाखूना एक पारंपरिक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी मानी जाती है, जिसे कई जगहों पर जोड़ों के दर्द, पाचन से जुड़ी समस्याओं और सूजन में सहायक माना जाता है। इसके अंदर प्राकृतिक गुण होते हैं जो शरीर को संतुलित रखने में मदद कर सकते हैं।

नाखूना के संभावित उपयोग

जोड़ों और मांसपेशियों के दर्द में सहायक

1. नाखूना को अक्सर लेप (Poultice) या सेक के रूप में बाहरी तौर पर इस्तेमाल किया जाता है, जिससे जोड़ों के दर्द और रूमेटिक दर्द में आराम मिल सकता है।

2. पाचन को सपोर्ट करने में उपयोगी पारंपरिक रूप से इसे गैस, पेट में मरोड़, सूजन और ब्लोटिंग जैसी समस्याओं में सहायक माना जाता है।

3. सूजन कम करने में सहायक इसमें प्राकृतिक Anti-inflammatory गुण बताए जाते हैं, जो शरीर को सूजन में मददगार हो सकते हैं।

4. त्वचा और घावों में उपयोग कुछ पारंपरिक उपयोगों में इसे घाव, अल्सर और त्वचा संबंधी समस्याओं में भी लगाया जाता है।

5. अन्य पारंपरिक उपयोग लोक चिकित्सा में इसे कान दर्द और कुछ प्रकार की सूजन में भी इस्तेमाल किया जाता रहा है।

क्या वात-पित्त प्रकृति वाले लोग कच्चा सलाद खा सकते हैं?

क्या वात-पित्त प्रकृति वाले लोग कच्चा सलाद खा सकते हैं?

ayurvedguide.com



पिकी कुंज

बहुत से लोग हेल्दी रहने के लिए रोज सलाद खाना शुरू कर देते हैं—गाजर, खीरा, ककड़ी, मूली जैसी कच्ची सब्जियां, लेकिन अगर आपकी प्रकृति वात-पित्त है, तो आयुर्वेद के अनुसार इन्हें खाते समय थोड़ी समझदारी और सावधानी जरूरी होती है।

आयुर्वेद मानता है कि हर चीज के कुछ खास गुण होते हैं और वही गुण शरीर के दोषों पर असर डालते हैं। इसलिए यह समझना जरूरी है कि कच्ची सब्जियों का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है।

कच्ची सब्जियां वात को क्यों बढ़ा सकती हैं? कई कच्ची सब्जियां जैसे गाजर और मूली स्वभाव से थोड़ी भारी, रूखी और ठंडी मानी जाती हैं। जब इन्हें बिना किसी तैयारी के कच्चा खा लिया जाता है तो यह शरीर में जाकर पाचन पर थोड़ा दबाव डाल सकती हैं खासकर जिन लोगों में वात दोष पहले से ज्यादा होता है, उनके लिए यह चीजें:

1. पचने में समय ले सकती हैं
2. पेट में गैस या भारीपन पैदा कर सकती हैं

3. कभी-कभी जोड़ों में दर्द या शरीर में जकड़न भी बढ़ा सकती हैं

यही कारण है कि वात प्रकृति वाले लोगों को कच्चा सलाद खाते समय थोड़ा संतुलन बनाकर चलना चाहिए।

खीरा पित्त को शांत करता है, लेकिन खीरा और ककड़ी को तासीर बहुत ठंडी मानी जाती है। इस वजह से यह पित्त दोष को शांत करने में काफी मददगार होते हैं। गर्मी,

जलन या पित्त से जुड़ी समस्याओं में खीरा अच्छा माना जाता है, लेकिन इसकी ठंडी प्रकृति का एक दूसरा पहलू भी है। अगर इसे बहुत ज्यादा मात्रा में या बहुत ठंडा खालिया जाए, तो यह वात दोष को बढ़ाने का कारण बन सकता है। ऐसे में जिन लोगों को पहले से वात की समस्या है, उन्हें थोड़ी सावधानी रखनी चाहिए।

क्या वात-पित्त वाले लोग सलाद बिल्कुल न खाएं? ऐसा बिल्कुल नहीं है। आप इन सब्जियों को खा सकते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि आपको उनके गुणों को थोड़ा संतुलित करना होगा।

आयुर्वेद में एक बहुत दिलचस्प सिद्धांत है—किसी भी खाद्य पदार्थ के गुणों को दूसरे पदार्थों के साथ मिलाकर बदला जा सकता है। यानी सही तरीके से तैयार किया गया सलाद शरीर के लिए ज्यादा अनुकूल हो सकता है।

सलाद खाने का सही तरीका

1. फ्रिज से निकालकर तुरंत न खाएं अगर गाजर, खीरा या ककड़ी फ्रिज में रखी हुई हैं, तो उन्हें सीधे निकालकर तुरंत खाना ठीक नहीं है। उस समय उनकी तासीर बहुत ज्यादा ठंडी होती है। बेहतर होगा कि उन्हें 1-2 घंटे के लिए बाहर क्रिया गया सलाद शरीर के लिए ज्यादा अनुकूल हो सकता है।

2. मसालों का सही इस्तेमाल करें जब आप सलाद तैयार करें, तो उसमें कुछ चीजें जरूर मिलाएं:

1. थोड़ा सा काला नमक

2. थोड़ा धुना हुआ जीरा पाउडर
3. ऊपर से थोड़ा नींबू का रस

इन चीजों का फायदा यह है कि यह पाचन अग्नि को मजबूत करती हैं। जब आप इन सब्जियों को खा सकते हैं, तो कच्ची सब्जियां शरीर में जाकर भारीपन या गैस नहीं बनातीं। इससे वात दोष के बढ़ने की संभावना काफी कम हो जाती है। फिर भी परेशानी हो तो क्या करें? कुछ बिल्कुल न खाएं? ऐसा बिल्कुल नहीं है। आप इन सब्जियों को खा सकते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि आपको उनके गुणों को थोड़ा संतुलित करना होगा।

आप इन सब्जियों को हल्का सा स्टीम कर लें, यानी भाप में थोड़ा नरम होने तक पका लें। इससे उनकी रूखाई और भारीपन कम हो जाता है। इसके बाद ऊपर से थोड़ा सा:

1. घी, या
2. तिल का तेल
3. डाल दें। इससे सब्जियों की तासीर संतुलित हो जाती है और यह वात-पित्त प्रकृति के लिए ज्यादा अनुकूल बन जाती है।

निष्कर्ष वात-पित्त प्रकृति वाले लोगों को कच्ची सब्जियां पूरी तरह छोड़ने की जरूरत नहीं है। बस उन्हें सही तरीके से खाना जरूरी है—

1. बहुत ठंडी न हों,
2. सही मसालों के साथ खाई जाएं,
3. जरूरत पड़े तो हल्की स्टीम करके खाई जाएं।

गन्ना, शरीर के लिए औषधि

पिकी कुंज

लोहा इसे प्यास बुझाने और तुरंत ऊर्जा पाने के लिए पीते हैं। अगर शरीर में डिहाइड्रेशन हो जाए, बहुत ज्यादा गर्मी लग रही हो या कमजोरी महसूस हो रही हो, तो गन्ने का रस तुरंत राहत दे सकता है।

गन्ने में प्राकृतिक शर्करा, कई तरह के विटामिन, कैल्शियम और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। इसलिए इसे केवल स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी माना जाता है।

लेकिन आयुर्वेद में गन्ने को सिर्फ एक मीठा पेय नहीं, बल्कि कई स्थितियों में लाभ देने वाला आहार बताया गया है। गन्ने के पाँच बड़े फायदे, इसके सेवन की सही विधि और किन लोगों को इसे नहीं लेना चाहिए

वात और पित्त प्रकृति वालों के लिए गन्ना आयुर्वेदिक ग्रंथों में बताया गया है कि गन्ने का रस मीठे स्वाद वाला, स्निग्ध यानी चिकनाई देने वाला और ठंडी प्रकृति का होता है।

* जिन लोगों के शरीर में वात बढ़ने के कारण रूखापन, कमजोरी या इन्फेक्शन रहती है, उनके लिए गन्ना लाभकारी हो सकता है। यह शरीर में नमी और चिकनापन बनाए रखने में मदद करता है।

* जिन लोगों में पित्त अधिक रहता है, जैसे शरीर में बहुत गर्मी लगना, जलन होना, ज्यादा पसीना आना या त्वचा पर लाल चकत्ते होना — ऐसी स्थितियों में भी गन्ना शीतल प्रभाव देकर राहत दे सकता है।

ऊर्जा बढ़ाने और वजन बढ़ाने में सहायक गन्ने का रस शरीर को पोषण देने वाला माना जाता है। इसमें प्राकृतिक शर्करा होने के कारण यह शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है।

* जिन लोगों को जल्दी थकान महसूस होती है, कमजोरी रहती है या शरीर में ताकत कम लगती है, उनके लिए सीमित मात्रा में गन्ने का सेवन लाभदायक हो सकता है।

* आयुर्वेद में इसे 'बृंहण' यानी शरीर को पोषण देकर वजन और बल बढ़ाने वाला भी बताया गया है। इसलिए जिन लोगों का वजन बहुत कम है और वे स्वस्थ तरीके से वजन बढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए यह उपयोगी हो सकता है।

कब्ज और पाचन समस्याओं में लाभ जिन लोगों को अक्सर कब्ज की शिकायत रहती है और सुबह पेट ठीक से साफ नहीं होता, उनके लिए गन्ना फायदेमंद माना जाता है। इसी कारण से कब्ज की समस्या में गन्ने का सेवन राहत दे सकता है।

एसिडिटी और पेट की जलन में मदद गन्ने का रस प्राकृतिक रूप से ठंडा प्रभाव देता है। इसीलिए एसिडिटी और पेट की जलन में मदद गन्ने का रस प्राकृतिक रूप से ठंडा प्रभाव देता है। इसीलिए एसिडिटी और पेट की जलन में मदद गन्ने का रस प्राकृतिक रूप से ठंडा प्रभाव देता है।

* जिन लोगों को एसिडिटी, सीने में जलन, गैस्ट्राइटिस या पेट में अल्सर जैसी समस्याएँ होती हैं, उन्हें इससे आराम मिल सकता है।

* यह पेट में होने वाली अतिरिक्त गर्मी को कम करने में मदद करता है।

* यदि किसी को पतले दस्त हो रहे हों



या बार-बार ढीले मल की समस्या हो, तो ऐसे समय गन्ने का सेवन नहीं करना चाहिए।

लोवर के लिए फायदेमंद लोवर से जुड़ी कई समस्याओं में भी गन्ने का रस लाभकारी माना जाता है। जब शरीर में पित्त बढ़ जाता है, तब कई बार पीलिया यानी जॉन्डिस जैसी समस्या भी हो सकती है।

* गन्ने का रस शरीर से अतिरिक्त पित्त को बाहर निकालने में मदद कर सकता है, जिससे लोवर को राहत मिलती है। इसी कारण कई पारंपरिक उपचारों में जॉन्डिस के दौरान गन्ने के रस का उपयोग किया जाता रहा है।

शरीर की धातुओं और प्रतिरोधक क्षमता पर प्रभाव आयुर्वेद के अनुसार शरीर में सात धातुएँ होती हैं। गन्ने का रस इन धातुओं के पोषण में सहायक माना जाता है।

* खास तौर पर रस धातु, रक्त धातु और शुक्र धातु पर इसका सकारात्मक प्रभाव बताया गया है।

* शरीर में यदि शुक्राणुओं की कमी हो या कमजोरी महसूस होती हो, तो गन्ना मददगार हो सकता है।

* वहीं महिलाओं में भी यदि प्रजनन से संबंधित कमजोरी या थकान हो, तो सीमित मात्रा में इसका सेवन लाभ दे सकता है।

* इन धातुओं के अच्छे पोषण से शरीर की ओज शक्ति यानी इम्युनिटी भी मजबूत बनी रहती है।

रक्तस्राव से जुड़ी समस्याओं में लाभ गन्ने का रस रक्त पित्त को शांत करने वाला माना गया है।

* यदि किसी व्यक्ति को गर्मियों में नाक से खून आना, बवासीर में रक्तस्राव होना या महिलाओं में मासिक धर्म के समय अत्यधिक रक्तस्राव होना जैसी समस्याएँ हों, तो गन्ने का रस मदद कर सकता है।

* इसके साथ यह कब्ज को कम करके बवासीर की समस्याओं में भी राहत दे सकता है।

* यदि पेशाब करते समय जलन होती है, बार-बार पेशाब आना, पेशाब ठीक से साफ न होना या पेशाब में खून आना जैसी समस्याएँ हों, तो गन्ने का रस लाभ दे सकता है।

* कुछ स्थितियों में यह किडनी स्टोन या प्रोस्टेट से जुड़ी समस्याओं में भी सहायक माना जाता है।

गन्ने का सेवन करने की सही विधि आयुर्वेद के अनुसार

* गन्ने के अधिकतर लाभ तब मिलते हैं जब इसे सीधे चूसकर खाया जाए। इसके लिए गन्ने को अच्छी तरह धोकर उसका छिलका हटा लें और छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। फिर दाँतों से अच्छी तरह चबा-चबाकर उसका रस निकालें।

ऐसा करने से रस में लार मिल जाती है, जिससे यह पचने में थोड़ा आसान होता है।

* गन्ना पचने में थोड़ा भारी होता है, इसलिए इसे धीरे-धीरे और अच्छी तरह चबाकर ही खाना चाहिए।

मश्रीन से निकला रस पीते समय सावधानी आजकल अधिकतर लोग मश्रीन से निकला गन्ने का रस पीते हैं। अगर ऐसा करना हो तो कुछ बातों में ध्यान रखना जरूरी है।

* सबसे पहले यह देख लें कि गन्ने को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरे तरीके से रस निकाला जा रहा हो।

* दूसरी बात, रस हमेशा ताजा ही पीना चाहिए। लंबे समय तक रखा हुआ गन्ने का रस जल्दी खराब होकर एसिडिक हो सकता है।

* तीसरी बात, इसे बहुत ज्यादा मात्रा में नहीं पीना चाहिए। लगभग आधा या एक छोटा गिलास ही पर्याप्त होता है और इसे धीरे-धीरे घूट लेकर पीना चाहिए।

गन्ने का रस कब नहीं पीना चाहिए

1. सूर्यास्त के बाद गन्ने का रस पीना उचित नहीं माना जाता।
2. इसके अलावा खाना खाने के तुरंत बाद भी इसे नहीं पीना चाहिए, क्योंकि इससे कफ बढ़ सकता है।
3. सबसे अच्छा समय दोपहर के भोजन के लगभग तीन से चार घंटे बाद

माना जाता है, यानी लगभग शाम 4 से 4:30 बजे के आसपास। इस समय यह शरीर को ठंडक देने में मदद करता है।

रस में क्या मिलना जा सकता है गन्ने के रस में बर्फ मिलाना सही नहीं माना जाता लेकिन स्वाद और पाचन सुधारने के लिए इसमें थोड़ा नींबू या थोड़ा अदरक मिलाया जा सकता है।

हालांकि जिन लोगों को एसिडिटी की समस्या होती है, उन्हें अदरक मिलाने से बचना चाहिए।

क्या डायबिटीज के मरीज गन्ना ले सकते हैं डायबिटीज को आयुर्वेद में प्रमेह कहा गया है और इसमें कफ बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों से बचने की सलाह दी जाती है। गन्ने का रस भी कफ बढ़ाने वाला होता है और इसमें शर्करा व कैलोरी की मात्रा भी अधिक होती है। इसलिए

* जिन लोगों को ब्लड शुगर बहुत ज्यादा बढ़ी हुई है, मोटापा है या कफ प्रकृति अधिक है, उन्हें गन्ने का रस नहीं पीना चाहिए।

लेकिन कुछ ऐसे लोग जिनकी ब्लड शुगर लगभग नियंत्रण में है, शरीर दुबला है और जिनकी प्रकृति वात या पित्त है, वे कभी-कभी बहुत कम मात्रा में इसका सेवन कर सकते हैं।

किन लोगों को गन्ना नहीं लेना चाहिए कुछ स्थितियों में गन्ने का सेवन नहीं करना चाहिए।

* जिन लोगों को बार-बार सर्दी-खांसी रहती है, अस्थमा है, एलर्जिक राइनाइटिस है या शरीर में कफ अधिक बनता है, उन्हें इससे बचना चाहिए।

* त्वचा रोग, खुजली या शरीर में कीड़े यानी वर्म की समस्या होने पर भी गन्ने का सेवन उचित नहीं माना जाता।

* जिन लोगों की पाचन शक्ति कमजोर है या जिन्हें बार-बार पतले दस्त होते हैं, उन्हें भी इसे नहीं लेना चाहिए।

इस तरह गन्ना सिर्फ स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि कई स्थितियों में स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी हो सकता है। लेकिन इसका सही तरीके से और सही मात्रा में सेवन करना जरूरी है। यदि सावधानी के साथ लिया जाए, तो यह शरीर को ऊर्जा देने के साथ-साथ कई समस्याओं में राहत भी दे सकता है।

धर्म अध्यात्म



दीपक की लौ और नियति का खेल: राजा भद्राश्व की कथा!



पिंकी कुंडू

दिशाओं में फैला था। वे इतने प्रतापी और न्यायप्रिय थे कि उनके साम्राज्य को जगत में 'भद्राश्ववर्ष' के नाम से जाना जाने लगा। एक दिन उनके द्वार पर साक्षात् महर्षि अगस्त्य का आगमन हुआ। मुनि के तेज से राजमहल आलोकित हो उठा। राजा ने नतमस्तक होकर उनका स्वागत किया और प्रार्थना की कि ऋषिवर कुछ समय महल में ही विश्राम करें। अगस्त्य मुनि ने मुस्कराते हुए कहा, 'रहे राजन! मैं यहाँ सात दिवस व्यतीत करूँगा। राजा के आनंद की सीमा न रही। उन्होंने अपनी पटरानी काँतिमती और अन्य रानियों को आदेश दिया कि वे प्रतिदिन मुनि के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

राणी काँतिमती साधारण सुंदरी नहीं थीं। उनके मुखमंडल पर ऐसा ओज था मानो बारह सूर्य एक साथ उदित हो गए हों। जब वे प्रथम दिन मुनि के समक्ष आईं, तो अगस्त्य जी उन्हें देखते ही रह गए। उनके मुख से अनायास निकला, 'राजन! तुम परम सौभाग्यशाली हो। अगस्त्य मुनि जैसे जितेंद्रिय और शांत ऋषि की यह प्रतिक्रिया सबको अचंचित कर गई। लेकिन सिलसिला यहाँ नहीं रुका: * दूसरे दिन: रानी को देखते ही मुनि बोले, 'रहा! शोक! सारा संसार इस सत्य से वंचित रह गया।' * तीसरे दिन: वे बुदबुदाए, 'रहोगे उस गोविंद की माया नहीं जानते, जिसने मात्र एक क्षण की प्रसन्नता में इन्हें यह वैभव दे दिया।' * चौथे दिन: मुनि ने भावुक होकर हाथ ऊपर उठाए और पुकारा, 'रहे जगन्नाथ! आपकी लीला अपरंपर है!' * पाँचवें और छठे दिन: वे स्वयं को और राजा को धन्य कहते रहे, मानो कोई गहरा राज उनको आँखों के सामने तैर रहा हो। सातवें दिन का दृश्य और मुनि का नृत्य

सातवें दिन तो मर्यादा की सीमा ही टूट गई। रानी को देखते ही मुनि अगस्त्य अचानक खिलखिलाकर हँसने लगे और चिल्लाए, 'रमूख! राजा, रानी और सेवक सब मूख हैं जो मेरी बात नहीं समझ रहे। इतना कहकर वे सुध-बुध खोकर सभा के बीच नाचने लगे। एक धीरे-धीरे महामुनि को इस तरह नृत्य करते देख राजा भद्राश्व दुविधा में पड़ गए। उन्होंने करबड़ होकर पूछा, 'रभगवन! क्षमा करें, पर आपके इस व्यवहार का रहस्य क्या है? आप कभी संसार को वंचित बताते हैं, कभी हमें मूख कहते हैं और आज यह नृत्य? कृपया मेरा संशय दूर करें।' * पूर्वजन्म का रहस्य: एक छोटा सा कर्म, एक बड़ा प्रतिफल * मुनि अगस्त्य शांत हुए और गंभीर स्वर में बोले, 'राजन! अपने इस वैभव के पीछे का कारण सुनो।' * पूर्वजन्म में तुम राजा नहीं, बल्कि हरिदत्त नामक एक धनी वैश्य के साधारण से 'दास' थे। यह रानी काँतिमती तब भी तुम्हारी पत्नी थी और उसी वैश्य के यहाँ 'दासी' थी। राजा और रानी मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगे। मुनि ने आगे कहा: 'एक बार आश्विन मास की द्वादशी को उस वैश्य ने भगवान विष्णु के मंदिर में दीप-



दान का संकल्प लिया। उसने तुम्हें और काँतिमती को मंदिर की व्यवस्था हेतु साथ रखा। जब पूजा पूर्ण हुई, तो वैश्य ने तुम्हें एक ही जिम्मेदारी सौंपी— 'इस दीपक की लौ बुझनी नहीं चाहिए।'

मुनि बोले, 'तुम दोनों ने उस पूरी रात पलक झपकाए बिना उस दीपक की रक्षा की। तेल कम हुआ तो तेल डाला, हवा चली तो आंचल की ओट दी। तुमने केवल उस जलते हुए दीपक की रखवाली

की थी, जिसे जलाया किसी और ने था और धन किसी और का था।' * अगस्त्य मुनि ने समझाया: वैभव क्यों मिला? 'राजन, केवल एक रात पराये दीपक की रक्षा करने के पुण्य से तुम आज महान राजा बने और तुम्हारी पत्नी को यह अलौकिक सौंदर्य और वैभव प्राप्त हुआ।' * सब मूख क्यों? 'रमूख इसलिए नाचा क्योंकि लोग सांसारिक सुखों के पीछे भागते हैं, पर उस विष्णु भक्ति के छोटे से दीपक की महिमा को नहीं जानते। अगर रक्षा मात्र से इतना पुण्य मिलता है, तो जो स्वयं दीपक प्रज्वलित करते हैं, उन्हें क्या कुछ प्राप्त नहीं होगा!' * स्वयं को धन्य क्यों कहा? 'मैंने खुद को धन्य इसलिए कहा क्योंकि मुझे हर कण में श्रीहरि की लीला दिख रही है। यह रहस्य जानकर राजा भद्राश्व की आँखों में आँसू आ गए। उन्हें समझ आया कि ईश्वर की भक्ति में किया गया छोटा सा छोटा कार्य भी कभी व्यर्थ नहीं जाता। उन्होंने मुनि से और रुकने का आग्रह किया, परंतु अगस्त्य मुनि ने उन्हें योग्य पुत्र का आशीर्वाद दिया और कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पुष्कर के लिए प्रस्थान किया।

हनुमानजी की पूजा सबसे जल्दी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली मानी गई

शनिवार के दिन हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए विशेष उपाय करें तो कुछ ही समय में किस्मत चमक सकती है। ये खास उपाय आपकी हर मनोकामना पूरी कर सकते हैं और सभी कष्टों का निवारण कर सकते हैं। 1- शनिवार के दिन राम मंदिर में जाएं। हनुमान जी के मस्तक का सिंदूर दाहिने हाथ के अंगूठे से लेकर सीता माता के श्रीरूप के श्रीचरणों में लगा दें। मनोकामना पूरी करने के लिए प्रार्थना करें। 2- शनिवार की सुबह स्नान करने के बाद बड़े के पेड़ का एक पत्ता तोड़ें और इसे साफ पानी से धो लें। अब इस पत्ते को कुछ देर हनुमानजी के सामने रखें। इसके बाद इस पर केसर से श्रीराम लिखें। अब इस पत्ते को अपने पर्स में रख लें। साल भर आपका पर्स पैसों से भरा रहेगा। 3- हनुमान जी की कृपा पाने के लिए शनिवार के दिन ब्रत करके शाम के समय बूंदी का प्रसाद बांटने से भी पैसों की तंगी दूर हो जाती है। 4- शनिवार के दिन हनुमान जी के मन्दिर में जाएं। उनके कंधों पर से सिन्दूर लाकर अपने कलेजे पर लगाएं। नजर का प्रभाव समाप्त होगा।



और समृद्धि के द्वार खुलेंगे। 5- शनिवार को शाम के समय हनुमान जी को केवड़े का इत्र व गुलाब की माला चढ़ाएं। हनुमान जी को खुश करने का यह सबसे सरल उपाय है। 6- जीवन की समस्त समस्याओं के निवारण के लिए शनिवार की शाम हनुमान जी के मंदिर में जाएं और रामरक्षा स्त्रोत का पाठ करें। 7- शनिवार की शाम को हनुमान मंदिर में जाएं। एक सरसों के तेल का और एक शुद्ध घी का दीपक जलाएं। वहीं बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। हनुमान जी की कृपा पाने का ये एक अचूक उपाय है। 8- शनिवार के दिन हनुमानजी के पैरों में फिटकरी रखें फिर जिन्हें बुरे सपने आते हों वे अपने सिरहाने इस फिटकरी को रखें। बुरे सपने नहीं आएंगे।

जो लोग केवल फूलों से देवी को मजाते हैं....

उन्हें क्या पता शक्ति केवल कोमल नहीं होती — वह प्रचंड भी होती है, संहारिणी भी, करुणामयी भी। जब भीतर का अंधकार सीमा पार करता है, तब माँ का उग्र स्वरूप प्रकट होता है। वह भय नहीं देती भय को ही भस्म कर देती है। ॐ कालिकायै नमः।

घोररूपिणी चामुण्डे, सर्वदुष्ट विनाशिनि। भद्रकालि नमस्तुभ्यं, रक्ष रक्ष मम सर्वदा ॥ जिसने एक बार "क्रीं" बीज को हृदय से जपा, उसके जीवन से दुष्ट शक्तियाँ स्वयं दूर हो जाती हैं। शक्ति को परखने वाले जल जाते हैं, और समर्पित होने वाले तर जाते हैं। जय माँ काली। जय उग्र शक्ति।



ॐ: पंचतत्व और सृष्टि का मूल बीज

पिंकी कुंडू ॐ केवल एक अक्षर नहीं, बल्कि वह आदि ध्वनि है जो समस्त सृष्टि का आधार है। जब हम बीज अक्षरों की बात करते हैं, तो 'ॐ' उस मूल स्वरूप को दर्शाता है जिससे सब कुछ उत्पन्न और प्रकट हुआ है। पंचतत्व और 'ॐ' का अंतर्संबंध सृष्टि की प्रत्येक रचना— चाहे वह जीव-जंतु हो, दानव, मानव, देव, यक्ष या गंधर्व— सब इन्हीं पंचतत्वों की अभिव्यक्ति हैं। चूँकि यह संपूर्ण जगत पंचतत्वों की माया है, इसलिए 'ॐ' की साधना वास्तव में पंचतत्वों की ही साधना है। * मूल आधार: जिस साधक का यह एकाक्षर सिद्ध हो जाता है, उसके पाँचों तत्व स्वतः ही सध जाते हैं।

बीज और गर्भ: 'ॐ' समस्त अक्षरों और मंत्रों का बीज है। यदि अन्य मंत्रों या बीजों में परिवर्तन किया जाए, तो वे विशिष्ट रूप से एक या दो तत्वों को साधने का कार्य करते हैं। पूर्णता: इसके विपरीत, 'ॐ' साक्षात् 'गर्भ' स्वरूप है। बीज होने के कारण इसमें समस्त तत्व समाहित हैं, अतः इसकी साधना से सभी तत्व एक साथ संतुलित और सिद्ध होने लगते हैं। सार: 'ॐ' वह केंद्र बिंदु है जहाँ से विस्तार शुरू होता है और जहाँ अंत में सब विलीन हो जाता है। इसकी साधना साधक को प्रकृति के मूल घटकों (पंचतत्वों) पर विजय प्राप्त करने और पूर्णता की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करती है।



33 कोटि (प्रकार) देवी-देवताओं की सूची:

- पिंकी कुंडू 8 वसु (प्रकृति के संरक्षक): आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभास (ये पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, अंतरिक्ष आदि के प्रतीक हैं)। 11 रुद्र (शिव के रूप): मनु, मन्थु, शिव, महत, ऋध्वज, महिनस, उम्रतेरस, काल, वामदेव, भव, और धृत-ध्वज (विनाश और पुनरुत्थान के देवता)। 12 आदित्य (सूर्य के रूप): अंशुमान, अर्यमन, इंद्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषा, भग, मित्र, वरुण, वैवस्वत और विष्णु (सौरमंडल की 12 शक्तियाँ)। 2 अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य): स्वास्थ्य और औषधियों के देवता (नासत्य और दक्ष)।



देव और असुर दोनों के एक ही पिता, महर्षि कश्यप

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देव और असुर दोनों एक ही पिता, महर्षि कश्यप की संतान हैं, जो सौतेले भाई थे। अदिति के पुत्र देव (आदित्य) कहलाए और दिति/दनु के पुत्र असुर (दैत्य/दानव)। देव धर्म, त्याग और प्रकाश के प्रतीक हैं, जबकि असुर शक्ति, भोग और अंधकार के प्रतीक माने जाते हैं। देव और असुर के बीच का मुख्य अंतर और विवरण: उत्पत्ति: दोनों प्रजापति कश्यप की संतानों में से हैं। देव (Sur/Deva): अदिति के पुत्रों को आदित्य या देव कहा जाता है। ये परोपकारी और देवताओं के रूप में पूजे जाते हैं। असुर (Asura/Daitya/Danava): दिति और दनु की संतानें क्रमशः दैत्य और दानव कहलाईं, जो बाद में असुर के रूप में जानी गईं। * प्रकृति/स्वभाव: देवों का स्वभाव परोपकारी और नेक है, जबकि असुर अपनी अपार शक्ति का उपयोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करते हैं। * युद्ध: वेदों में सुरु (देवताओं) और असुरों के बीच निरंतर संघर्ष (युद्ध) का वर्णन है, जिसमें असुर कई बार विजयी भी हुए। * गुरु: असुरों के गुरु भृगु पुत्र शुक्राचार्य थे, जो अत्यंत ज्ञानी माने जाते।



यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में झज्जर जिले के अभ्यर्थियों का शानदार प्रदर्शन

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सफल अभ्यर्थियों से की मुलाकात

परिवहन विशेष न्यूज

अभ्यर्थियों ने साझा किए अनुभव, बोले एकाग्रता से मेहनत ही सफलता की कुंजी झज्जर जिले की 5 बेटियों सहित कुल सात अभ्यर्थियों का सिविल सेवा में हुआ चयन युवाओं के लिए प्रेरणा बने सफल अभ्यर्थी, मेहनत से हासिल होती है बड़ी सफलता : डीसी



करते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। उन्होंने सफल अभ्यर्थियों के अभिभावकों को भी बधाई देते हुए कहा कि इस सफलता में अभिभावकों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है, जो पूरे तैयारी काल में अपने बच्चों का मार्गदर्शन और हौसला बढ़ाते हैं। इस अवसर पर सफल अभ्यर्थियों ने भी अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि जीवन में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर एकाग्रता के साथ मेहनत करना ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने बताया कि सिविल सेवा परीक्षा देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक है, जिसमें लाखों युवा सफलता का सपना लेकर शामिल होते हैं, लेकिन सही दिशा में निरंतर प्रयास करने से सफलता अवश्य मिलती है। सफल अभ्यर्थियों में पांच बेटियों भी शामिल हैं, जो महिला

सशक्तिकरण का प्रतीक हैं और क्षेत्र की छात्राओं को सिविल सेवा में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेंगी। झज्जर जिले के सफल अभ्यर्थी बहादुरगढ़ सेक्टर-6 निवासी तथा मूल रूप से गांव मांडीठी की राखी ने सिविल सेवा परीक्षा-2025 में 65वीं रैंक हासिल की है। गांव साल्हावास निवासी जतिन जाखड़ पुत्र दीपक जाखड़ ने परीक्षा में 191वीं रैंक हासिल की है। गांव बादली की बेटे प्रख्या गुलिया पुत्री रामबीर गुलिया ने इस परीक्षा में 265 वीं रैंक प्राप्त की है। इससे पहले उन्होंने पिछली बार 584 वीं रैंक प्राप्त की थी। गांव खेड़ी सुल्तानपुर की बेटे शंतल चौहान पुत्री प्रमोद चौहान ने सिविल सेवा परीक्षा में 405 वीं रैंक हासिल की है। गांव पहाड़ीपुर (अछेज) की बेटे डॉ. अंकिता सिवाच ने

सिविल सेवा परीक्षा में 442 वीं रैंक प्राप्त की है। गांव डीथल निवासी साहिल अहलावत पुत्र संजीव अहलावत ने सिविल सेवा परीक्षा में 735 वीं रैंक प्राप्त की है। बहादुरगढ़ सहकारी समिति के सहायक रजिस्ट्रार जीत कुमार भुक्कल ने सिविल सेवा परीक्षा में 776 वीं रैंक प्राप्त की है। गांव जसौर खेड़ी निवासी मानसी पुत्री वीरेंद्र कुमार ने सिविल सेवा परीक्षा में 852 वीं रैंक हासिल की है। इस अवसर पर अतिरिक्त उपायुक्त जगनवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, बहादुरगढ़ एसडीएम अभिनव सिवाच, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली डॉ. रमन गुप्ता, नगरधीश नमिता कुमारी, डीआईपीआर ओ.सतीश कुमार तथा सफल अभ्यर्थियों के अभिभावक उपस्थित रहे।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने 38 लाख 16 हजार 099 रुपये की स्टाम्प ड्यूटी जमा कराने के लिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 09 मार्च। उपमंडल अधिकारी (नागरिक) बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच द्वारा स्टाम्प ड्यूटी से संबंधित एक महत्वपूर्ण आदेश पारित किया गया है। जारी आदेशों के अनुसार सब-रजिस्ट्रार कार्यालय में पंजीकृत कुछ वसीकाओं (दस्तावेजों) के मूल्यांकन की जांच के दौरान पाया गया कि निर्धारित मानकों के अनुसार स्टाम्प ड्यूटी पूर्ण रूप से जमा नहीं करवाई गई थी।

मामले पर संज्ञान लेते हुए एसडीएम अभिनव सिवाच ने संबंधित दस्तावेजों का नियमानुसार पुनः मूल्यांकन करवाया, जिसमें स्टाम्प शुल्क की कमी पाई गई। एसडीएम ने नियमानुसार कार्रवाई करते हुए संबंधित पक्षों द्वारा कम जमा की गई स्टाम्प ड्यूटी की राशि भरने के निर्देश जारी किए हैं। आदेशों के अनुसार कुल 38



लाख 16 हजार 99 रुपये की स्टाम्प ड्यूटी जमा कराने के निर्देश दिए गए हैं। संबंधित पक्षों को निर्धारित समयावधि के भीतर यह राशि सरकारी खाते में जमा कराने के लिए कहा गया है। एसडीएम अभिनव सिवाच ने स्पष्ट किया कि राजस्व से संबंधित मामलों में किसी भी प्रकार की अनियमितता को गंभीरता से लिया

जाएगा। उन्होंने कहा रजिस्ट्री करवाते समय पूरी स्टॉप ड्यूटी भरें। यह राशि विकास कार्यों पर खर्च होती है। भविष्य में भी इस प्रकार के मामलों की नियमित रूप से जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाती रहेगी। उन्होंने कहा कि निर्धारित समय सीमा में कम पाई गई स्टॉप ड्यूटी की राशि न भरने पर लैंड रेवेन्यू हो जाएगा।

झज्जर में बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजली अदालत आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 09 मार्च। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचवीएन) द्वारा अधीक्षण अभियंता कार्यालय में 10 मार्च मंगलवार को उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक एवं बिजली अदालत का आयोजन किया जाएगा। उपभोक्ता कष्ट निवारण

फोरम की बैठक का आयोजन सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक किया जाएगा। यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता ऑपरेशन सर्कल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की (बिजली चोरी संबंधी शिकायतों को छोड़कर) अन्य शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा।

इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवारों की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं का निवारण किया जाएगा। यदि कोई उपभोक्ता कार्यकारी अभियंता या एसडीओ की कार्यवाही से संतुष्ट नहीं है, तो वह चेयरमैन और अधीक्षण अभियंता के समक्ष अपनी बात रख सकता है।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का समयबद्ध व संतोषजनक निपटारा सुनिश्चित करें : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

एक छत के नीचे सभी विभागों की शिकायतों के त्वरित समाधान के उद्देश्य से लगाए जा रहे समाधान शिविर

झज्जर, 09 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि समाधान शिविर में प्राप्त प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध, पारदर्शी एवं संतोषजनक निपटारा सुनिश्चित किया जाए, ताकि नागरिकों को अनावश्यक रूप से कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य आमजन की समस्याओं का एक ही स्थान पर त्वरित समाधान करना है, जिससे सुशासन की अवधारणा को और अधिक मजबूती मिले। स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में उपायुक्त नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई



कर रहे थे। शिविर के दौरान विभिन्न विभागों से संबंधित 9 शिकायतें दर्ज की गईं। उपायुक्त ने सभी शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई कर शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। उपायुक्त पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के

निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक सोमवार और वीरवार प्रातः 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय के साथ-साथ बहादुरगढ़, बेरी और बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से प्रशासन आमजन की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य कर रहा है।

उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद अवश्य स्थापित करें तथा उन्हें विभाग द्वारा की जा रही कार्रवाई से अवगत कराएं। इससे न केवल पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि शिकायतों का स्थायी समाधान भी सुनिश्चित होगा और नागरिकों का प्रशासन पर विश्वास मजबूत होगा।

इस अवसर पर डीएफओ साहित्यी रेड्डी, एडीसी जगनवास, सीटीएम नमिता कुमारी, डीआरओ मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी दिनेश कुमार, एक्सईन लोक निर्माण विभाग सुमित कुमार, डीआईओ अमित बंसल, जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य गौरव सैनी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

झज्जर जिला में मछली पालन की अपार संभावनाएं : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में प्रोसेसिंग यूनिट लगाने के साथ साथ मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 09 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रोसेसिंग यूनिट लगाने की दिशा में आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों में ऐसी भूमि, जहां जलभराव की स्थिति बनी रहती है, वहां मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं हैं और इससे किसानों की आय में वृद्धि की जा सकती है। इस बीच जिला मत्स्य अधिकारी अमित सिंह ने डीसी को विभागीय योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिला में 1255 हेक्टेयर क्षेत्र में मत्स्य पालन हो रहा है। जिला में कुल 566 तालाब हैं और गत माह के दौरान 13 हजार 913 मीट्रिक टन मत्स्य उत्पादन दर्ज किया गया है।

उन्होंने जिले में मत्स्य पालन की वर्तमान स्थिति, संभावित क्षेत्रों और संचालित योजनाओं की प्रगति से उपायुक्त को अवगत कराया। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने मत्स्य विभाग से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा करते हुए मत्स्य पालन को बढ़ावा देने की दिशा में सजगता से कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को पारंपरिक खेती के साथ-साथ मछली पालन के लिए प्रोत्साहित किया जाए, ताकि वे अतिरिक्त आय अर्जित कर सकें। इसके लिए मत्स्य विभाग किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराए।

उन्होंने निर्देश दिए कि विभागीय योजनाओं की जानकारी किसानों तक पहुंचाने के लिए गांव-स्तर पर जागरूकता कैंप लगाए जाएं। इन कैंपों के माध्यम से मछली पालन से जुड़ी सब्सिडी, बीज, चारा, तालाब निर्माण, आधुनिक तकनीक और मार्केटिंग से संबंधित जानकारी दी जाए, ताकि अधिक से अधिक किसान इस व्यवसाय से जुड़ सकें। उन्होंने कहा



कि ग्राम पंचायतों से प्रस्ताव पास कराते हुए जलभराव भूमि पर मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जाए। उपायुक्त ने कहा कि मत्स्य पालन रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम है और इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

उन्होंने विभागीय अधिकारियों को योजनाओं के प्रभावशीलता और लाभार्थियों के चयन में पारदर्शिता बनाए रखने के निर्देश भी दिए। डीसी ने कहा कि भविष्य में भी इस दिशा में नियमित समीक्षा कर प्रगति सुनिश्चित की जाएगी।

इस अवसर पर सीटीएम नमिता कुमारी, डीआरओ मनवीर सांगवान, सीएमजीएफ खुशी कौशल, डीडीपीओ निशा तंवर, मत्स्य अधिकारी मंजू बाला व अंजू रानी सभी बीडीपीओ सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

अन्न भंडारण से जुड़ी योजना के कार्य को गति प्रदान करें संबंधित विभाग : डीसी

- गोदामों के निर्माण कार्य को जल्द से जल्द पुरा कर इस महत्वाकांक्षी योजना को धरातल पर उतारें



झज्जर, 09 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सोमवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में भारत सरकार द्वारा प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पैक्स) की भागीदारी के साथ अन्न भंडारण की महत्वाकांक्षी योजना की प्रगति की समीक्षा की। दुनिया की सबसे बड़ी अन्न भंडारण योजना के तहत जिला में गोदामों का निर्माण होना है। जिसमें झज्जर जिला अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने अधिकारियों को इस परियोजना को गंभीरता और समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अन्न भंडारण की सुविधा स्थानीय किसानों के लिए लाभदायक साबित होगी। डीसी ने इस कार्य की नियमित मॉनिटरिंग और गति प्रदान करने के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने यह निर्देश सोमवार को लघु सचिवालय में प्राथमिक कृषि समितियों के बैठक में अन्न भंडारण योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए दिए। बैठक में सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियों झज्जर (मीटिंग संयोजक), महाप्रबंधक सहकारी बैंक झज्जर सहित खाद्य आपूर्ति विभाग, केंद्रीय भंडारण निगम, राज्य भंडारण निगम, नाबार्ड तथा भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में योजना के तहत जिले में प्रस्तावित गोदामों के निर्माण को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। उपायुक्त एवं समिति अध्यक्ष ने सभी संबंधित अधिकारियों से फीडबैक लेते हुए

कार्य की प्रगति सुनिश्चित करते हुए जल्द से जल्द डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए। उपायुक्त ने कहा कि लक्ष्य यह है कि कम समय में गोदामों का निर्माण कार्य पूरा कराकर इस महत्वाकांक्षी योजना को धरातल पर उतारा जाए, ताकि भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय की पहल सहकारी से समृद्धि को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए योजना को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अधिकारियों ने जिले में भंडारण क्षमता बढ़ाने, किसानों को बेहतर सुविधाएं देने और खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने को लेकर अपने-अपने सुझाव भी रखे।

सूर्य नगर में आंखों का निःशुल्क कैंप लगाया गया

हरियाणा हिसार: राजेश सलूजा

सूर्यनगर में आंखों का निःशुल्क कैंप आयोजित किया गया। इस कैंप का आयोजन सूर्य नगर स्थित आशीर्वाद हॉस्पिटल के संचालक डॉ. नवीन शर्मा द्वारा किया गया। कैंप में नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर सुल्तान मान व उनकी टीम का अहम योगदान रहा। इस अवसर पर वार्ड नंबर 10 की पार्षद श्रीमती साक्षी शर्मा विजड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं जिन्होंने रिबन काटकर शिविर का शुभारंभ किया। डॉ. नवीन शर्मा ने बताया कि आशीर्वाद हॉस्पिटल की तरफ से यह पहला निःशुल्क नेत्र कैंप लगाया गया है। उन्होंने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है और भविष्य में ऐसे ही कैंप अस्पताल द्वारा लगाए जाएंगे। अस्पताल में भी शहर से बहुत



कम दरों पर शूगर, बीपी, जोड़ों को दर्द, माइग्रेन, एलर्जी, दिल और दिमाग की बीमारियां, बच्चों और महिलाओं की हर प्रकार की बीमारियां जैसे हर तरह के मरीजों का इलाज किया जाता है। इस कार्यक्रम में डॉ. नवीन शर्मा, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. प्रवीण शर्मा,

राजेश शर्मा, सूर्य नगर ब्राह्मण सभा के प्रधान रवि दत्त शर्मा, श्री भगवान परशुराम के अध्यक्ष हरकिशन शर्मा, रविंद्र शांडिल्य, गोपी राम, राम कला शर्मा, महावीर शर्मा, सुनील दत्त, रोहताश शर्मा, नरेश शर्मा, सचिन शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

लुवास द्वारा झज्जर के मेहराना गांव में पशुपालकों के लिए डेयरी प्रशिक्षण गोष्ठी का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार के पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग एवं हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र, लकाड़िया द्वारा झज्जर जिले के मेहराना गांव में अनुसूचित जाति वर्ग के लाभार्थियों के लिए डेयरी पालन विषय पर पशुपालक गोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, भारत सरकार के भैंस नसल सुधार प्रोजेक्ट द्वारा चित्तपोषित किया गया। पशुपालन गोष्ठी को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा के मार्गदर्शन तथा कार्यक्रम के निदेशक पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. डी. एस. बिहान व हरियाणा पशुविज्ञान क्षेत्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. संजय यादव की देखरेख में आयोजित किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण



कार्यक्रमों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वैज्ञानिक जानकारी और नवीन तकनीकों की जानकारी मिलने से पशुपालक अपने डेयरी व्यवसाय को अधिक लाभकारी बना सकते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से पशुपालकों को पशुओं की बेहतर देखभाल, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने और रोगों की रोकथाम से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, जिससे उनकी आय में भी

वृद्धि होती है। गोष्ठी के समन्वयक के रूप में पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. दीपिन चन्द्र यादव व डॉ. मान सिंह तथा पशु चिकित्सा चिकित्सालय परिसर के सहायक प्राध्यापक डॉ. निलेश सिन्धु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोष्ठी के दौरान डॉ. दीपिन चन्द्र यादव ने डेयरी पशुओं के वैज्ञानिक आवास, संतुलित आहार तथा उचित

प्रबंधन के बारे में जानकारी दी और बताया कि सही प्रबंधन अपनाकर पशुपालक दुग्ध उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं। पशुचिकित्सक डॉ. दिनेश गुलिया ने दुग्ध देने वाले पशुओं की देखभाल, साफ-सफाई तथा स्वच्छ दूध उत्पादन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। वहीं डॉ. निलेश सिन्धु ने डेयरी पशुओं में होने वाली प्रमुख बीमारियों, उनके लक्षण तथा नियंत्रण के उपायों

के बारे में जानकारी देते हुए पशुपालकों को समय-समय पर टीकाकरण कराने की सलाह दी। कार्यक्रम के दौरान पशुपालकों को हरियाणा सरकार की डेयरी विकास से संबंधित विभिन्न योजनाओं की भी जानकारी दी गई। गोष्ठी में उपस्थित पशुपालकों ने विशेषज्ञों से चर्चा कर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त किया। गोष्ठी के उपरांत पशुपालकों को खनिज मिश्रण इत्यादि वितरित किया गया। इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र, डॉ. पुष्पेन्द्र जाखड़, श्री रमन व अजय ने भी पशुपालकों को प्रोत्साहित किया।

जनसंपर्क अधिकारी डॉ. नीलेश सिन्धु ने बताया कि हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र, लकाड़िया, झज्जर द्वारा समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रों के पशुपालकों में जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, ताकि युवा पीढ़ी में पशुपालन के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाते रहेंगे।

मुख्यमंत्री से की शिष्टाचार भेंट

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब अध्यक्ष ओंकार धर द्विवेदी के नेतृत्व में पदाधिकारियों व वरिष्ठ पत्रकारों ने गोरखनाथ मंदिर परिसर में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को संगठन की आगामी योजनाओं और पत्रकारों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। भेंट के दौरान प्रेस क्लब के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री से नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होने का आग्रह किया। मुलाकात के दौरान प्रेस क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने पत्रकारों के हितों, उनकी सुरक्षा, सम्मान और कार्य के

बेहतर माहौल जैसे महत्वपूर्ण विषयों को भी मुख्यमंत्री के समक्ष प्रमुखता से रखा। पदाधिकारियों ने कहा कि पत्रकार समाज की आवाज होते हैं और वे जनहित के मुद्दों को सरकार और प्रशासन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाते हैं। ऐसे में पत्रकारों के हितों की रक्षा और उनके लिए बेहतर सुविधाओं की व्यवस्था भी उतनी ही जरूरी है। अध्यक्ष ओंकार धर द्विवेदी ने कहा कि गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब हमेशा से पत्रकारों की एकजुटता, उनके अधिकारों की रक्षा और समाज के प्रति जिम्मेदार पत्रकारिता को मजबूत करने के लिए कार्य करता रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्रियों को बताया कि संगठन पत्रकारों के कल्याण, सुरक्षा और सामाजिक सरोकार से जुड़े विषयों को प्राथमिकता के साथ आगे

बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हुए कहा कि लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पत्रकार समाज और सरकार के बीच एक सशक्त कड़ी के रूप में कार्य करते हैं और जनभावनाओं को शासन-प्रशासन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब की नई कार्यकारिणी पत्रकारिता की गरिमा को बनाए रखते हुए समाज और संगठन के हित में बेहतर कार्य करेगी। इस अवसर पर सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे और मुख्यमंत्री से संगठन के विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक चर्चा की।

सतर्क होमगार्ड ने नाकाम की किडनैपिंग की साजिश, एसएसपी ने दिए नगद इनाम

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। इट्टी के दौरान एक होमगार्ड की सतर्कता और सूझबूझ से अपहरण की साजिश घटना टल गई। सदिग्ध गतिविधि देख होमगार्ड ने आंटी रोकने की कोशिश की तो उसमें सवार दो युवक मौके से भाग निकले। बाद में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दोनों को हिरासत में ले लिया। घटना 09 मार्च 2026 की है। इट्टी पर तैनात होमगार्ड विजय

प्रताप सिंह को एक आंटी में सवार लोगों का आचरण संदिग्ध लगा। शक होने पर उन्होंने आंटी को रोकने का प्रयास किया। इसी दौरान आंटी में बैठे दो युवक अचानक भाग निकले। होमगार्ड विजय प्रताप सिंह ने तत्काल इसकी सूचना अपने उच्चाधिकारियों को दी। सूचना मिलते ही पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आंटी चालक और आंटी को हिरासत में ले लिया। इसके बाद

सीसीटीवी फुटेज और अन्य माध्यमों की मदद से फरार हुए दोनों युवकों को भी पकड़ लिया गया। पुलिस के अनुसार होमगार्ड की सतर्कता और तत्परता के कारण अपहरण की घटना को समय रहते रोक लिया गया। इस सराहनीय कार्य के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. कौस्तुभ ने होमगार्ड विजय प्रताप सिंह को 10,000 के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया।

छत्तीसगढ़ कुंज में धूमधाम से सम्पन्न हुआ रंगोत्सव होली मिलन एवं सनातन नारी शक्ति सम्मान समारोह

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन (परिक्रमा मार्ग/ज्ञान गुदड़ी स्थित श्रीपंच हरिव्यासी महानिर्वाणी निर्माही अखाड़ा (छत्तीसगढ़ कुंज) में मां सीता रसोई के द्वारा रंग पंचमी के उपलक्ष्य में दिव्य व भव्य 'रंगोत्सव होली मिलन' बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ जिसके अंतर्गत प्रख्यात भजन गायक बाबा चित्र-विचित्र महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा होली के भजनों व रसियाओं का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया (जिन पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं ने जमकर नृत्य किया (साथ ही रंग-गुलाल व फूलों की होली खेली। कार्यक्रम के अंतर्गत 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर सनातन नारी शक्ति सम्मान समारोह आयोजित हुआ जिसमें प्रख्यात समाजसेवी डॉ. गौरव शर्मा (संस्थापक अध्यक्ष, जी-सिल एजुकेशनल सोसाइटी, नैकी की राह व सनातन पथ) एवं मां सीता रसोई की संस्थापक व संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ) की अध्यक्ष रंजना रत्नर श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) के द्वारा ब्रज सेवा संस्था की निदेशक श्रीमती वसुधा चतुर्वेदी, प्रख्यात ओडिसी नृत्यांगना कुंजलता बेहरा, श्रीमती भारती शर्मा एवं प्रमुख भाजपा नेत्री श्रीमती सरोज गोला आदि 10 महिलाओं को महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में विशेष



योगदान देने के लिए सम्मानित किया गया (साथ ही प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट कर उनका अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर श्रीमज्जगद्गुरु विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले), गोरिलाल कुंज के श्रीमहंत स्वामी किशोर दास देवजू महाराज,

पीपाद्वाराचार्य जगदगुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, महामंडलेश्वर महंत गोपीकृष्ण दास महाराज, पुराण मनीषी कौशिक जी महाराज, चतुःसंप्रदाय के श्रीमहंत फूलडील बिहारीदास महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री, प्रख्यात साहित्यकार रघुपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ब्रज भूमि कल्याण



परिषद् के अध्यक्ष पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, महंत सुन्दरदास महाराज, संत रसिक माधव दास, प्रमुख समाजसेवी एस. के. शर्मा, याज्ञिक रत्न आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, आचार्य मृदुलकांत शास्त्री, डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, प्रख्यात चित्रकार रघुपी रत्नर द्वारिका आनंद, भागवताचार्य संजीव कृष्ण ठाकुरजी, महंत रामचंद्र दास, आचार्य पीठाधीश्वर स्वामी यदुनंदनाचार्य महाराज, युवराज देवांत आचार्य, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, पार्थद सुमित गौतम, आचार्य ईश्वर चन्द्र रावत आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

चित्रकूट स्थित श्रीतुलसी पीठ के उपाधिकारी आचार्य रामचंद्र दास महाराज एवं प्रख्यात सनातन सेवी अंशुल पाराशर ने महोत्सव में पथारे सभी सन्तों-विद्वानों व आर्गंतुक अतिथियों को गुलाल लगाकर, पटुका ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण करके स्वागत किया।



दीन दुखियों, विकलांगों, निर्धनों, निराश्रितों व असहायों की निस्वार्थ सेवा ही भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य: के.एल. बंसल

दिव्यांग सहायता शिविर में 36 जरूरतमंदों को निःशुल्क वितरित किए व्हील चेयर, वैशाखी और कृत्रिम अंग

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन (रुक्मिणी विहार, सैक्टर-1 स्थित भक्ति धाम में प्रमुख समाज सेविका श्रीमती कृष्णा देवी गोयल (धर्मपत्नी कृष्ण गोपाल गोयल) माताजी राजकुमार गोयल (कृष्णा राइस मिल्स, पातडा) की चतुर्थ पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट (रंज.) पटियाला/वृन्दावन के द्वारा षष्ठ दिव्यांग सहायता शिविर आयोजित किया गया जिसमें कल्याणम् करोति, मथुरा के सहयोग से 36 दिव्यांगों को निःशुल्क व्हील चेयर, वैशाखी और कृत्रिम अंग आदि वितरित किए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य ठाकुरजी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष के.एल. बंसल ने कहा कि हमारे ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य दीन दुखियों, विकलांगों, निर्धनों, निराश्रितों, असहायों आदि की सेवा करना ही है। इसीलिए हमारे ट्रस्ट के द्वार श्रीधाम वृन्दावन के अलावा देश के अन्य स्थानों पर भी समय-समय पर अनेक सेवा कार्य किए जा रहे हैं। कल्याणम् करोति, मथुरा के सचिव सुनील शर्मा ने कहा कि चौरासी लाख

योनियों में मनुष्य रूप में जन्म मिलना ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा है। इसीलिए हम सभी का यह प्रयत्न होना चाहिए, कि शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर व्यक्तियों की सेवा करके उन्हें सशक्त बनाएं। प्रख्यात साहित्यकार रघुपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से आज दिव्यांग बालकों को उनसे सम्बन्धित जो उपकरण व अन्य सामग्री निःशुल्क वितरित की गई है, वह समाजसेवा के क्षेत्र में अत्यंत सराहनीय कार्य है।

इस अवसर पर भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के सचिव संदीप कुमार सिंघला, उपाध्यक्ष नरेश गोयल, मुख्य संरक्षक कर्मचंद गोयल, हर्षवर्धन बंसल, कोषाध्यक्ष रामशरण गुप्ता, प्रमुख समाजसेवी राजकुमार गोयल, राजकुमार गोयल, रॉबिन बंसल, ट्रस्ट के विशेष सलाहकार आर.के. गर्ग, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन वृहद भंडारे के साथ हुआ जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।



मौन स्मरण: आपका मस्तिष्क तब भी याद रखता है जब आप भूल जाते हैं

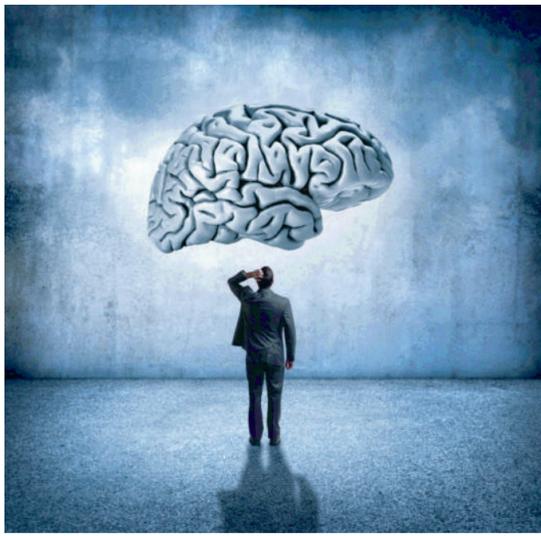


विजय गर्ग

मानव स्मृति मस्तिष्क की सबसे आकर्षक क्षमताओं में से एक है। अक्सर लोग यह मानते हैं कि जब वे कुछ याद नहीं कर पाते, तो जानकारी पूरी तरह से खो जाती है। हालाँकि, तंत्रिका विज्ञान और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में आधुनिक शोध से कुछ आश्चर्यजनक बात सामने आती है: जब हम सोचते हैं कि हम कुछ भूल गए हैं, तब भी मस्तिष्क उस जानकारी को संग्रहीत कर सकता है। इस घटना को कभी-कभी मौन स्मरण या छिपी हुई स्मृति भी कहा जाता है।

स्मृति की छिपी हुई शक्ति हमारा मस्तिष्क लगातार अनुभवों, वातावरणों, छवियों और भावनाओं को रिकॉर्ड करता है। कुछ यादें आसानी से वापस मिल जाती हैं, जैसे बचपन की कोई घटना या कोई परिचित चेहरा। अन्य समय के साथ गायब हो जाते हैं। लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि कई मामलों में मेमोरी मिटती नहीं है, बल्कि उस तक पहुँचना कठिन हो जाता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि स्मृति पुनर्प्राप्ति संकेतों और संदर्भ पर निर्भर करती है। कोई विशेष गंध, स्थान या संगीत का



टुकड़ा अचानक उन यादों को वापस ला सकता है जो वर्षों से भुला दी गई थीं। इससे पता चलता है कि मस्तिष्क ने जानकारी को

हमेशा संरक्षित रखा था।

मस्तिष्क किस प्रकार यादें संग्रहीत करता है

स्मृति निर्माण में मुख्य रूप से मस्तिष्क का एक भाग शामिल होता है जिसे हिप्पोकैम्पस कहा जाता है। यह मस्तिष्क के विभिन्न भागों में वितरित होने से पहले सूचना को व्यवस्थित करने और संग्रहीत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय के साथ, यादें दोहराव और भावनात्मक महत्व के माध्यम से मजबूत होती हैं।

कभी-कभी संग्रहीत जानकारी और पुनर्प्राप्ति पथ के बीच संबंध कमजोर हो जाता है। जब ऐसा होता है, तो व्यक्ति को ऐसा महसूस हो सकता है कि वह कुछ भूल गया है, भले ही मस्तिष्क में उस स्मृति का निशान अभी भी मौजूद है।

रोजमर्रा की जिंदगी में मौन स्मरण कई रोजमर्रा के अनुभव मौन स्मरण को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, आपको बातचीत के दौरान किसी व्यक्ति का नाम याद करने में कठिनाई हो सकती है, लेकिन घंटों बाद वह नाम अचानक आपके दिमाग में आ जाता है। इसी प्रकार, छात्र अक्सर परीक्षा के दौरान यह मानकर जानकारी याद कर लेते हैं कि वे उसे भूल गए हैं।

यह विलंबित स्मरण इसलिए होता है क्योंकि मस्तिष्क पृष्ठभूमि में सूचना को

संसाधित करता रहता है। जब सही मानसिक संबंध बन जाता है, तो संग्रहीत स्मृति पुनः उभर आती है।

शोध क्या सुझाव देता है तंत्रिका विज्ञान में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि स्मृति के निशान मस्तिष्क में तब भी बने रह सकते हैं, जब वे अस्थायी रूप से दुर्गम हो जाते हैं। मस्तिष्क इमेजिंग तकनीकों का उपयोग करने वाले प्रयोगों से पता चला है कि पिछले अनुभवों से संबंधित तंत्रिका पैटर्न अभी भी पहचाने जा सकते हैं, भले ही व्यक्ति सचेत रूप से घटना को याद न कर सके।

ऐसे निष्कर्ष मानव मस्तिष्क की जटिलता और सूचना को संरक्षित करने की उसकी उल्लेखनीय क्षमता पर प्रकाश डालते हैं।

स्मृति को मजबूत करना यद्यपि मौन स्मरण से पता चलता है कि स्मृति लचीली होती है, लेकिन कुछ आदतें स्मृति प्रदर्शन को बेहतर बना सकती हैं। इनमें शामिल हैं:

नियमित रूप से पढ़ना और सीखना पर्याप्त नींद शारीरिक व्यायाम

माइंडफुलनेस और ध्यान पुनरावृत्ति और अभ्यास ये प्रथाएं तंत्रिका संबंधों को मजबूत करने और स्मरण को आसान बनाने में मदद करती हैं।

निष्कर्ष मौन स्मरण का विचार हमें याद दिलाता है कि भूलने का अर्थ हमेशा जानकारी खोना नहीं होता। मानव मस्तिष्क लगातार अनुभवों को संग्रहीत और व्यवस्थित करता रहता है, तब भी जब हम इसके बारे में अनभिज्ञ होते हैं। यह समझना कि स्मृति कैसे काम करती है, न केवल मस्तिष्क के प्रति हमारी सराहना को गहरा करता है, बल्कि हमें ऐसी आदतें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है जो आजीवन सीखने और मानसिक कल्याण का समर्थन करती हैं।

कई मायनों में, हमारा मस्तिष्क एक विशाल पुस्तकालय की तरह है। कभी-कभी हमें जिस पुस्तक की आवश्यकता होती है वह बस शल्फ पर प्रतीक्षा कर रही होती है, और सही समय आने पर उसे पुनः खोजने के लिए तैयार रहती है।

संवािनवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रखण्ड शिक्षावादी स्टूडेंट

नागरिक परिक्रमा : (संजय पराते की राजनैतिक टिप्पणियां)

1. गैस सिलेंडरों की कीमतों में वृद्धि : इस 7 लाख करोड़ रुपये का हिसाब कौन देगा?

मोदी सरकार ने घरेलू और व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की कीमतों में भारी वृद्धि की है। अब 924 रुपये वाला गैर सब्सिडी घरेलू सिलेंडर 924 रुपये की जगह 984 रुपये में, व्यावसायिक सिलेंडर 1923.50 रुपये की जगह 2085.50 रुपये तथा उज्ज्वला है गैस सिलेंडर 553 रुपये की जगह 613 रुपये में मिलेंगे। इससे पहले अप्रैल 2025 को घरेलू गैस सिलेंडर की दर में 50 रुपये तथा इसी माह 1 मार्च को व्यावसायिक गैस सिलेंडर की दर में 28 रुपये की वृद्धि की गई थी। इस प्रकार, मोदी राज में गैस की कीमत दुगुने से भी ज्यादा हो गई है।

सत्ता में आने से पहले मोदी सरकार ने 'बहुत हुई महंगाई की मार' का नारा लगाते हुए सड़कों पर प्रदर्शन किया था। सुभमा स्वराज का सिलेंडर सिर पर लिए हुए सड़क पर चलने वाली फोटो तो आज भी वायरल हो रहा है। वर्ष 2014 में दिल्ली में घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत लगभग 410 रुपये थी, जो आज लगभग 1103 रुपये हो गई है। यह वृद्धि 169 प्रतिशत बैठती है। देश में हर साल 180 करोड़ गैस सिलेंडरों की खपत होती है। इसका अर्थ है कि मोदी राज ने पिछले 12 सालों में आम जनता से केवल गैस सिलेंडरों से ही लगभग 7 लाख करोड़ रुपये अतिरिक्त निचोड़ लिए हैं। इस प्रकार, अंधाधुंध तरीके से गैस की कीमत बढ़ाने वाली वादाखिलाफ सरकार को माफ नहीं किया जा सकता।

गैस की कीमतों में जो बढ़ोतरी की गई है, उसका बोझ अंततः उपभोक्ताओं पर ही पड़ेगा। ये दोनों अमूल्य पूँजी उद्योगों और कामकाजी लोगों पर पहले से ही बढ़ती महंगाई और घटती वास्तविक आय के बीच और अधिक बोझ डालेंगे। गैस की कीमतों में इस वृद्धि से वास्तव में बचा जा सकता था, यदि मोदी सरकार सिलेंडरों पर करों से प्राप्त होने वाले राजस्व का एक छोटा सा हिस्सा छोड़ने के लिए तैयार हो जाती। ऐसा न करना, इस सरकार की जनविरोधी प्रवृत्ति को ही उजागर करता है।

मोदी सरकार ने इस वृद्धि के लिए पश्चिम एशियाई संघर्ष का हवाला दिया है। यह तर्क पूरी तरह से बचकाना है और खुद सरकार का कमजोरियों को छिपाने का प्रयास करता है। कल तक यह सरकार स्वयं अपनी पीठ थपथपा रही थी कि ईरान पर अमेरिकी-इजरायल हमले का भारत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि



मोदी सरकार हमले के प्रभावों से निपटने में पूरी तरह सक्षम है। यहां तक कि, रूस से तेल खरीदने के मामले में भी उसने अमेरिकी सरकार को झुका दिया है और यह उसकी कूटनीतिक जीत है। जबकि रूस ने घोषणा कर दी है कि अब वह भारत को तेल की कीमतों में कोई रियायत नहीं देगा और बढ़ी-चढ़ी कीमतें वसूलेगा।

पश्चिम एशिया के संघर्ष में प्रत्यक्ष रूप से अमेरिका का समर्थन करना अब हमें सीधे नुकसान पहुंचा रहा है। वास्तव में, यह सरकार की टूटपूट प्रशासन की युद्ध-उन्माद नीतियों के आगे आत्मसमर्पण और हमारे देश और उसके लोगों के हितों की अनदेखी करते हुए अमेरिकी वैश्विक हितों की सेवा करने की उसकी तैयार को दर्शाता है। मोदी सरकार का यह रुख यह हमारी घरेलू अर्थव्यवस्था को तबाह कर देगा। वास्तव में, यह युद्ध भातीय जनता के लिए जो तबाही और महंगाई ला रहा है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमने अपनी संप्रभुता खो दी है, जिसके बिना राजनैतिक आजादी का कोई मतलब नहीं रह जाता। मोदी सरकार ने पूरे देश की जनता को अमेरिका का गुलाम बना दिया है। गुलामी की ये जंजीरें इतनी मोटी हैं कि अपने देश के लिए तेल खरीदने के लिए अब हमें अमेरिका से अनुमति लेने की जरूरत है।

2. अब सुप्रीम कोर्ट भी पड़ा किताबों के पीछे!

सरकारों का किताबों के पीछे पड़ना कोई नई बात नहीं है। तानाशाह फासीवादी सरकारें

नहीं चाहती कि लोग पढ़े-लिखे, सही तथ्य उन तक पहुंचे। क्योंकि यदि ऐसा होता है, तो आम जनता के उनके सोचने समझने के स्तर में बढ़ोतरी होती है, उनके विश्लेषण करने की क्षमता में वृद्धि होती है। तब वे भेड़िया धसान की तरह किसी गोदी मीडिया के प्रचार का हिस्सा बनने से इंकार कर देती हैं। सत्ता में बैठे लोगों को इससे खतरा पैदा होता है।

पिछले वर्ष जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने 25 किताबों पर प्रतिबंध लगाया है। इन सब के पीछे यही तर्क था कि देश की एकता और अखंडता के लिए इन किताबों से खतरा है। इन प्रतिबंधित किताबों में अरुंधति रॉय की किताबें भी शामिल हैं। प्रतिबंधित किताबों की सूची में सलमान रुशदी की सेनेटिक वर्सेस, वेंडी डोनीगर की दि हिट्टे: एन आल्टरनेटिव हिस्ट्री, जेम्स डब्लू लीन की शिवाजी : हिंदू किंग इन इन्स्टाबल इंडिया, वास्तव में, यह युद्ध भातीय जनता के लिए जो तबाही और महंगाई ला रहा है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमने अपनी संप्रभुता खो दी है, जिसके बिना राजनैतिक आजादी का कोई मतलब नहीं रह जाता। मोदी सरकार ने पूरे देश की जनता को अमेरिका का गुलाम बना दिया है। गुलामी की ये जंजीरें इतनी मोटी हैं कि अपने देश के लिए तेल खरीदने के लिए अब हमें अमेरिका से अनुमति लेने की जरूरत है।

सरकारें चाहती हैं कि लोग वही किताब पढ़ें, जो वह चाहती है, ताकि आम जनता की सोच को उसके अनुरूप ढाला जा सके। इससे उसे सत्तारूढ़ प्रतिकूलता का सामना नहीं करना पड़ता। सरकारें चाहती हैं कि लोग वही खाए, वहीं पहने, वैसे ही भाषा बोले, वहीं देखे, नारे भी वही लगाए, जैसा वह चाहती हैं। सरकारें

मनुष्य को रोबोट में ढालना चाहती है, पहले से फिट प्रोग्रामिंग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप व्यवहार करे। लेकिन मनुष्य रोबोट नहीं है, उसे रोबोट में ढालने की कोशिश सफल नहीं हो सकती। वह जीता-जागता हाड़-मांस-चर्मा जैसा बना इंसान है, जिसके मस्तिष्क में खून का संचार हो रहा है और भावनाओं का उफान है। इसी मस्तिष्क ने रोबोट का निर्माण किया है। इसलिए रोबोट को न इंसान बनाया जा सकता है और न इंसान को रोबोट। लेकिन यही बात समझने से हमारी सरकारें इंकार करती हैं। भड़ककर इस किताब को प्रतिबंधित करने और जिम्मेदारों को 'अदालत में हाजिर हो' का हुक्म सुनाने की है। लगता है कि सरकार का जिस तेजी से नैतिक पतन हो रहा है, उसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट भी फिसल रहा है।

देश की अदालतों में भ्रष्टाचार किस हद तक पसरा पड़ा है, यह इस देश की आम जनता का अनुभव है। नीचे से लोक ऊपर तक की अदालतों में जज की नाक के नीचे और आंख के सामने पेशी की तारीखों को आगे बढ़वाने और सुविधानुसार लेने के लिए चढ़ावा चढ़ाया जाता है। उमर खालिद कई सालों से जेल में है और राम रहीम परोल में बाहर आकर मस्ती मार रहा है। कई जज पीठों में बैठकर संविधान विरोधी टिप्पणियां कर रहे हैं। कई जज भ्रष्ट आर्थिक लेन-देन के आरोपी हैं और एक पर तो संसद में ही मुकदमा चल रहा है। भारतीय अदालतों की दयनीयता के बारे में कई पूर्व और वर्तमान जज स्वीकारोक्ति कर चुके हैं।

इसलिए यदि प्रचलित न्यायाधीश एनसीईआरटी की किताब में उल्लेखित तथ्य को कोर्ट की गरिमा को गिराने वाला बता रहे हैं, तो महीदय यह तो कब की गिरकर नंगी हो चुकी है। इस नग्नता को आंख मूंदकर नहीं, कपड़े पहनाकर ही दूर किया जा सकता है। दिक्कत यही है कि ऐसे कपड़े नहीं हैं और सुप्रीम कोर्ट पूरी जनता से आंख मूंदकर इस नग्नता को न देखने का आदेश दे रहा है। ऐसे सुप्रीम कोर्ट की शय्य होना ही बेहतर है, जो अब जनता को न्याय देने के काबिल भी नहीं रह गई है। वह केवल निर्णय सुना रही है, जिसकी कोई अहमियत नहीं है जनता के लिए!

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं। संपर्क: 94242-31650)

राजनीतिक घृणा की अति और देश की प्रतिष्ठा

(अब क्या कहेंगे वे लोग, जो स्टेडियम के नाम को बहाना बनाकर प्रधानमंत्री को 'पनौती' कहने में संकोच नहीं करते थे?)

— डॉ. प्रियंका सौरभ

लोकतंत्र में असहमति और आलोचना को एक स्वस्थ परंपरा माना जाता है। सत्ता में बैठे सरकार, उसके निर्णयों और उसके नेतृत्व पर सवाल उठाना नागरिकों का अधिकार भी है और लोकतंत्र की मजबूती का प्रमाण भी। लेकिन जब आलोचना की सीमाएं टूटकर व्यक्तिगत कटाक्ष, उपहास और अपमान तक पहुँच जाती हैं, तब यह केवल राजनीतिक असहमति नहीं रह जाती, बल्कि एक ऐसी मानसिकता का रूप ले लेती है जो लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करती है। हाल के वर्षों में भारतीय राजनीति में वैचारिक मतभेदों की जगह कटुता और घृणा ने तेजी से स्थान बना लिया है। किसी भी घटना, उपलब्धि या राष्ट्रीय आयोजन को देखने से पहले उसे राजनीतिक चरम से परखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि कई बार देश से जुड़ी उपलब्धियाँ या आयोजनों को भी कुछ लोग केवल इसलिए तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगते हैं क्योंकि उनका संबंध उस नेतृत्व या सरकार से जोड़ दिया जाता है जिससे वे वैचारिक रूप से असहमत होते हैं।

खेल के मैदान को सामान्यतः राजनीति से अलग माना जाता है। खेल में प्रतिस्पर्धा होती है, हार-जीत होती है, लेकिन अंततः खेल भावना ही सर्वोपरि रहती है। किंतु जब खेल के मंच को भी राजनीतिक कटाक्ष और व्यक्तिगत टिप्पणियों का माध्यम बना दिया जाए, तो यह खेल की गरिमा और राष्ट्रीय भावना दोनों को आहत करता है। क्रिकेट जैसे खेल, जो भारत में करोड़ों लोगों की भावनाओं से जुड़ा है, उसे भी जब राजनीतिक तंज का विषय बना दिया जाता है तो यह प्रवृत्ति चिंताजनक प्रतीत होती है।

विडंबना यह है कि जिस स्टेडियम के नाम को लेकर कुछ लोगों ने व्यंग्य और कटाक्ष का सहारा लिया, उसी मैदान पर भारत ने विश्व कप जीतकर इतिहास रच दिया। यह घटना केवल खेल की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से भी बहुत कुछ कहती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्षणिक राजनीतिक टिप्पणियों और नकारात्मक बयानबाजी अंततः वास्तविक उपलब्धियों के सामने टिक नहीं सकती। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण लोकतंत्र में यह स्वाभाविक है कि सभी लोग एक ही राजनीतिक विचारधारा से सहमत नहीं होंगे। कोई भी नेता या सरकार आलोचना से परे नहीं हो सकती। लेकिन यह भी उतना ही आवश्यक है कि आलोचना तथ्यों, तर्कों और मर्यादों का आधार पर हो। जब आलोचना का स्वरूप गिरकर केवल व्यंग्य, अपमान और उपहास तक सीमित हो जाता है, तब वह लोकतांत्रिक संवाद की गरिमा को कम कर देता है।

सोशल मीडिया के विस्तार ने इस समस्या को और भी जटिल बना दिया है। आज हर व्यक्ति के पास अपनी राय व्यक्त करने का मंच है। यह लोकतांत्रिक दृष्टि से सकारात्मक भी है, क्योंकि इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

को नया विस्तार मिला है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखने में आता है कि कई बार बिना तथ्य जाँचे, बिना गंभीरता से सोचे लोग ऐसी टिप्पणियाँ कर देते हैं जो अनावश्यक विवाद और कटुता को जन्म देती हैं। कई बार लोग केवल किसी समूह विशेष को खुरकतने या भीड़ का हिस्सा बनने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग करने लगते हैं जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कही जा सकती।

राजनीतिक संवाद में भाषा की मर्यादा का विशेष महत्व होता है। शब्द केवल विचार व्यक्त नहीं करते, बल्कि समाज के वातावरण को भी प्रभावित करते हैं। जब सार्वजनिक जीवन में प्रयुक्त भाषा लगातार कटोरी और अपमानजनक होती जाती है, तो उसका प्रभाव समाज के सामान्य व्यवहार पर भी पड़ता है। धीरे-धीरे असहमति को दुश्मनी और आलोचना को अपमान समझने की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।

भारतीय राजनीतिक परंपरा में व्यंग्य और कटाक्ष की अपनी एक जगह रही है, लेकिन इसके साथ एक प्रकार का संतुलन और मर्यादा भी दिखाई देती थी। आज स्थिति कई बार ऐसी दिखाई देती है प्रयुक्त भाषा की तीव्रता और भाषा की कठोरता संवाद की संभावनाओं को ही समाप्त कर देती है। इससे समाज में अनावश्यक तनाव और विभाजन की स्थिति पैदा होती है।

इस संदर्भ में यह समझना भी आवश्यक है कि किसी भी लोकतंत्र में स्वस्थ आलोचना अनिवार्य होती है। यदि सरकार या नेतृत्व से कोई भूल होती है तो उसकी आलोचना होना स्वाभाविक है। मीडिया, बुद्धिजीवी और आम नागरिकों का यह दायित्व है कि वे सत्ता से सवाल पूछें। लेकिन आलोचना का उद्देश्य सुधार होना चाहिए, न कि केवल अपमान या उपहास।

आज समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह स्वस्थ आलोचना और अनावश्यक घृणा के बीच अंतर को समझे। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र की स्वाभाविक विशेषता है, लेकिन यदि ये मतभेद सामाजिक विभाजन का कारण बनने लगें तो यह स्थिति चिंता का विषय बन जाती है। इसलिए आवश्यक है कि हम असहमति को सम्मानजनक संवाद के रूप में स्वीकार करें, न कि उसे व्यक्तिगत आक्रामकता का माध्यम बना दें।

समाज के जागरूक वर्ग—जैसे लेखक, पत्रकार, शिक्षाविद और बुद्धिजीवी—इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सार्वजनिक विमर्शों का स्तर निर्भर न जाए। तर्क, तथ्य और मर्यादा के साथ अपनी बात रखने की परंपरा को मजबूत करना ही लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा योगदान हो सकता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि राजनीतिक सत्ता स्थायी नहीं होती। समय के साथ सरकारें बदलती रहती हैं, नेता आते-जाते रहते हैं और परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। लेकिन राष्ट्र की प्रतिष्ठा और उसकी गरिमा स्थायी होती है। इसलिए किसी भी राजनीतिक विवाद या असहमति में हमें इस मूल तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि अंततः हम सभी एक ही देश के नागरिक हैं और उसकी प्रतिष्ठा हम सभी की साझा जिम्मेदारी है।

बौद्धिक प्रदूषण और नशे के विरुद्ध सामाजिक उत्तरदायित्व -21वीं सदी की दो अदृश्य वैश्विक चुनौतियाँ

एडोकेट किशन सनमुखदास भावानी गाँविया महाराष्ट्र

गाँविया—वैश्विक स्तर पर 21वीं सदी मानव सभ्यता को तकनीक, विज्ञान, स्वास्थ्य, पर्यावरण और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक ले जा रही है, लेकिन इसी प्रगति के समानांतर दुनियाँ दो ऐसी अदृश्य और बढ़ती चुनौतियों से जूझ रही है, जिनका प्रभाव कहीं अधिक व्यापक, गहरा और दीर्घकालिक स्तर पर भविष्य के निर्माता युवाओं पर पड़ रहा है, वो हैं बौद्धिक प्रदूषण और नशा जिसके खिलाफ समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बन गई है। पर्यावरणीय प्रदूषण के समाधान की दिशा में वैश्विक तंत्रकानून, विज्ञान और तकनीक सतत सुधार के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हवा, पानी, प्लास्टिक, कचरा, औद्योगिक उत्सर्जन और कार्बन फुटप्रिंट को नियंत्रित करने के लिए नीतियाँ, शोध, संस्थान और संसाधन मौजूद हैं, लेकिन बौद्धिक प्रदूषण और नशे के विरुद्ध सामाजिक उत्तरदायित्व उतनी तेजी और स्टीकाता से नहीं बन पा रहा है। मैं एडोकेट किशन सनमुखदास भावानी गाँविया महाराष्ट्र मानता हूँ कि जब प्रश्न मानव चेतना, विचार, मूल्य और मानसिकता के प्रदूषण का हो, तो समाधान पारंपरिक नहीं रह जाता, बल्कि वह नैतिक, बौद्धिक, शैक्षिक और

सांस्कृतिक हस्तक्षेपों पर आधारित हो जाता है। यही कारण है कि बौद्धिक प्रदूषण किसी भी सभ्यता को भीतर से कमजोर करने वाला सबसे खतरनाक "अदृश्य संघर्ष" बन चुका है, जिसकी तुलना किसी भी भौतिक प्रदूषण से नहीं की जा सकती इसी प्रकार नशा आज केवल स्वास्थ्य का संकट नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था, सुरक्षा, जनसंख्या, परिवार, शिक्षा, अपराध, मानव संसाधन और राष्ट्रीय विकास से जुड़े बहुआयामी संकट का रूप ले चुका है। यह सोचना कि नशाखोरी रोकना केवल पुलिस, कानून या दंड व्यवस्था की जिम्मेदारी है, एक मूलतः और सीमित दृष्टिकोण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार नशे के बढ़ते मामलों में 70 प्रतिशत जटिल सामाजिक व्यवहार, वातावरण, परिवार, सांस्कृतिक प्रभाव और मानसिक तनाव से जुड़ी होती हैं, जबकि कानून केवल अंतिम चरण में हस्तक्षेप करता है। इच्छित नशे के खिलाफ लड़ाई वास्तव में समाज, परिवार शिक्षा तंत्र, स्वास्थ्य संस्थान, मीडिया, धार्मिक-सांस्कृतिक समुदायों और शासन प्रणाली इन सभी का संयुक्त युद्ध है। साधियों बात अगर हम बौद्धिक प्रदूषण एक अदृश्य खतरा और वैश्विक संकट है इसको समझने की करें तो बौद्धिक प्रदूषण को सरल शब्दों में परिभाषित किया जाए तो यह वह स्थिति है जब मनुष्य की सोच, समझ, विवेक,

निष्पक्ष-क्षमता और नैतिक चेतना गलत, भ्रमित, पक्षपातपूर्ण उग्र, हिंसक, असत्य या दुष्प्रभावित विचारों से प्रभावित हो जाती है। यह प्रदूषण किसी फेक्ट्री के धूरें या वाहन के धूरें की तरह दिखाई नहीं देता, लेकिन इसका नुकसान किसी भी वातावरण से बड़ा हो सकता है, क्योंकि यह व्यक्ति को विचारों, धारणाओं और सूचनाओं के भ्रमजाल में फँसाकर उसकी तार्किक क्षमता और सामाजिक चेतना को नष्ट कर देता है। फेक न्यूज़, नफरत आधारित प्रचार, कट्टर राष्ट्रवाद, उज्रवाद, नस्लीय विभाजन, षड्यंत्र, धार्मिक उन्माद, डिजिटल हेरफेर, गलत सूचना, दुष्प्रचार, हेट स्पीच और सोशल मीडिया एल्गोरिथ्म के माध्यम से फैलने वाला भ्रम, आज दुनियाँ भर के देशों में बौद्धिक प्रदूषण के मुख्य स्रोत बन चुके हैं। तकनीक और ज्ञान की उपलब्धता जितनी तेजी से बढ़ी है, उतनी ही तेजी से मानव मन की ऋणशीलता पर अर्धनियंत्रित सूचनाओं का बोझ बढ़ा है। इंटरनेट ने सूचना को लोकतांत्रिक बनाया, लेकिन उसी ने अज्ञान को भी संस्थापित रूप दे दिया। अब असत्य और असत्य में फँककरना एक आम नागरिक के लिए पहले से कहीं अधिक कठिन हो गया है। यह बौद्धिक धुंध न केवल व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करती है, बल्कि लोकतंत्र, सामाजिक सद्भाव, शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और मानवीय मूल्यों को भी कमजोर

करती है। इतिहास गवाह है कि सभ्यताएँ बाहरी हमलों से कम, आंतरिक भ्रम, विभाजन, गलत विचारधारा और मानसिक प्रदूषण से अधिक टूटती हैं। इसी कारण बौद्धिक प्रदूषण मानवता के लिए एक "साइलेंट ग्लोबल पैडैमिक" बनकर उभर रहा है।

साधियों बात अगर हम क्या बौद्धिक प्रदूषण का समाधान संभव है? इसको समझने की करें तो, भौतिक प्रदूषण के समाधान स्पष्ट हैं, फिल्टर, रिसाइक्लिंग, नैतिकता, तकनीक, कानून और स्वच्छ ऊर्जा। लेकिन बौद्धिक प्रदूषण का समाधान विज्ञान नहीं, बल्कि चेतना, शिक्षा, नैतिकता, संवाद, मीडिया जिम्मेदारी और सामाजिक संरचना के सुधार में निहित है। यह प्रदूषण तब पनपता है जब समाज तर्क की जगह अंधाधुनक को अपनाता है, जब शिक्षा का जगह अंधे पर आश्रित हो जाती है, जब मीडिया सूचना की जगह सनसनी को बेचने लगता है, और जब तकनीक सत्य को जगह भ्रम को अधिक प्रोत्साहित करती है। इसलिए समाधान बहुस्तरीय होना चाहिए, समालोचनात्मक सोच पर आधारित शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तथ्य-आधारित संवाद, मीडिया पारदर्शिता, सामाजिक संवाद, युवा नेतृत्व और बहुसांस्कृतिक सम्मान की संस्कृति। बौद्धिक प्रदूषण

को किसी एक संस्था, कानून या सरकार द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक चुनौती है। यह समाधान तभी संभव है जब वैश्विक समाज सत्य को मूल्य के रूप में स्वीकार करे, संवाद को संघर्ष से ऊपर रखे और शिक्षा को नैतिक नहीं बल्कि चेतना-निर्माण का माध्यम समझे। हर परिवार, हर स्कूल, हर विश्वविद्यालय और हर राष्ट्र को यह स्वीकार करना होगा कि विचारों की शुद्धता सभ्यता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। यदि मन प्रदूषित है तो प्रातिविनाश बन जाता है, और यदि विचार निर्मल है तो मानवता हर संकट का समाधान ढूँढ सकती है।

साधियों बात अगर हम नशे के खिलाफ लड़ाई केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, एक सामाजिक युद्ध है इसको समझने की करें तो, नशा किस्मों एक देश, समाज, धर्म, वर्ग या उम्र की समस्या नहीं, बल्कि वैश्विक महामारी है। ड्रग्स, शराब, तंबाकू, सिंथेटिक नशीले पदार्थ, प्रिंस्क्रिप्शन ड्रग्स का दुरुपयोग, गैमिंग और डिजिटल एडिक्शन ये सभी आधुनिक नशे के विस्तृत रूप हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनियाँ में हर वर्ष 3 करोड़ से अधिक लोग नशे से सीधे प्रभावित होते हैं और लाखों की मौतें इससे जुड़ी बीमारियों और अपराधों के माध्यम से होती हैं। नशा केवल एक

स्वास्थ्य समस्या नहीं, बल्कि अपराध, सीमा पार तस्करी, आतंकवाद, मानव तस्करी, घरेलू हिंसा, सड़क दुर्घटनाएँ, आत्महत्या, स्कूल ड्रॉप-आउट, बेरोजगारी और आर्थिक कठिनाई जैसे व्यापक संकटों को जन्म देता है। यह मान लेना कि इस समस्या को पुलिस, कानून और दंडात्मक व्यवस्था अकेले समाप्त कर देगी, एक बड़ी भूल है। पुलिस केवल अपराध को रोक सकती है, आदत को नहीं, कानून केवल सजा दे सकता है, मानसिकता को नहीं, और दंड केवल भय पैदा कर सकता है, समाधान नहीं। नशे की जड़ें मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव, परिवारिक टूटन, बेरोजगारी, अकेलापन, हिंसा, निराशा, असमानता और गलत संघर्ष में छिपी होती हैं। इसलिए नशा एक मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सांस्कृतिक संकट है, जिसका समाधान केवल दंड नहीं बल्कि पुनर्वास, संवाद, शिक्षा, सामुदायिक सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व में है। परिवारों को प्रारंभिक पहचान सीखनी होगी, स्कूलों को निवारण शिक्षा देनी होगी, मीडिया को नैतिक जिम्मेदारी निभानी होगी, स्वास्थ्य संस्थानों को उपचार और परामर्श केन्द्र में रखा होगा, और समाज को नशाखोरी को अपराधी नहीं बल्कि रोगी के रूप में समझकर उसके पुनर्निर्माण का प्रयास करना होगा।

एक परीक्षा से बड़ी जिंदगी : यू.पी.एस.सी. के इर्द-गिर्द बनती मानसिकता पर सवाल

(सफलता का एकमात्र पैमाना नहीं है यू.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी. से आगे भी है सफलता की दुनिया)

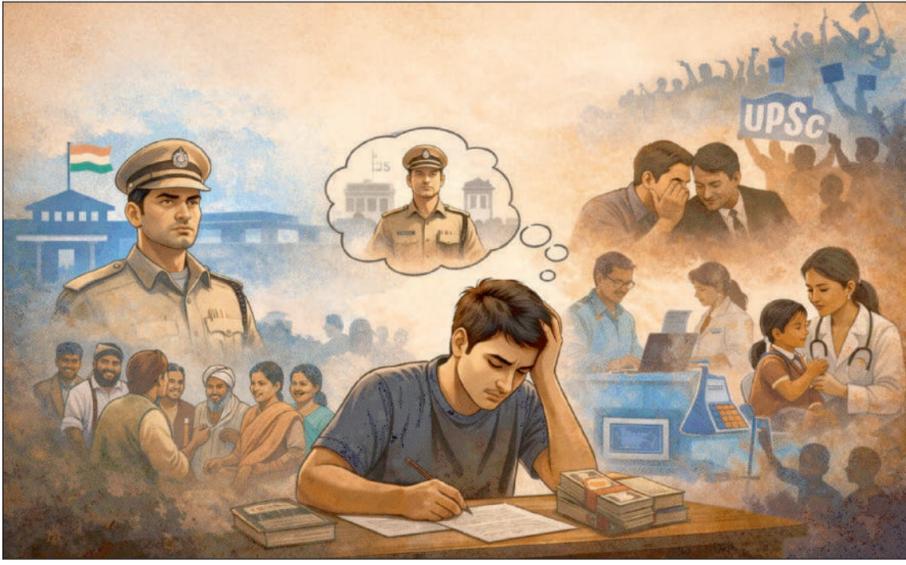
-डॉ. सत्यवान सौरभ

हाल ही में संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) के परिणाम घोषित हुए हैं। हर वर्ष की तरह इस बार भी सफल अभ्यर्थियों की कहानियाँ सुखियों में हैं। टॉपर्स के इंटरव्यू, उनकी रणनीति, उनकी मेहनत और संघर्ष की चर्चा पूरे देश में हो रही है। यह स्वाभाविक भी है। वर्षों की कठिन तैयारी के बाद जो युवा इस परीक्षा में सफल होते हैं, उनकी उपलब्धि निश्चित ही प्रशंसा के योग्य है।

लेकिन इस उत्सव के बीच एक दूसरा पक्ष भी है, जिस पर कम चर्चा होती है। वह है यू.पी.एस.सी. के इर्द-गिर्द हमारे समाज में बनती वह मानसिकता, जिसने इस परीक्षा को केवल एक अवसर नहीं बल्कि सफलता का अंतिम पैमाना बना दिया है।

धीरे-धीरे हमारे सामाजिक वातावरण में यह धारणा गहराती गई है कि पढ़ाई का सबसे बड़ा उद्देश्य यू.पी.एस.सी. है। घरों में, रिश्तेदारों की बातचीत में, यहां तक कि स्कूल-कॉलेज के माहौल में भी अक्सर यही संदेश सुनाई देता है कि असली सफलता वही है जो इस परीक्षा से होकर गुजरे। किसी परम में यदि कोई युवक या युवती भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) या भारतीय पुलिस सेवा (IPS) में चयनित हो जाता है तो वह पूरे परिवार और मोहल्ले के लिए गर्व का विषय बन जाता है। यह गर्व स्वाभाविक है, लेकिन इससे के साथ एक अनकहा संदेश भी समाज में फैलता है—जो इस परीक्षा में सफल नहीं हुआ, वह शायद उतना सफल नहीं है।

यही सोच कई बार लाखों युवाओं के मन पर अनावश्यक दबाव बना देती है। 18-19 वर्ष की आयु में जब कोई छात्र अपना भविष्य के बारे में सोच रहा होता है, तब अक्सर उसके सामने यू.पी.एस.सी. को ही सबसे बड़ा लक्ष्य बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि इन युवाओं में से बहुत कम लोग वास्तव में शासन व्यवस्था, नीतिनिर्माण या सार्वजनिक सेवा की



जटिलताओं को समझते हुए इस दिशा में आगे बढ़ते हैं। कई बार यह निर्णय प्रेरणा से अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा की कल्पना से प्रेरित होता है। सोशल मीडिया के दौर में यह प्रवृत्ति और तेज हुई है। छोटी-छोटी वीडियो विलफ, वीडियो में अधिकारियों की छवियाँ, "कलेक्टर साहब" या "सुपरकोंप" जैसे लोकप्रिय चित्रण युवाओं के मन में एक आकर्षक छवि बनाते हैं। लेकिन इन छवियों के पीछे की वास्तविकता—लंबे कार्य घंटे, प्रशासनिक जटिलताएँ, प्राकृतिक आपदाओं के समय निरंतर जिम्मेदारी, राजनीतिक दबाव और निर्णयों की कठिनाइयाँ—इनका उल्लेख शायद ही कभी होता है।

इसके साथ ही हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि देश का निर्माण केवल प्रशासनिक सेवाओं से नहीं होता। आज भारत की प्रगति में वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, उद्यमियों, शिक्षकों, डॉक्टरों और तकनीकी विशेषज्ञों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले हजारों युवा देश की डिजिटल संरचना को मजबूत बना रहे हैं। स्टार्ट-अप जगत में नए विचार किसानों, छोटे व्यापारियों और आम नागरिकों की समस्याओं के समाधान खोज रहे हैं। फिर भी इन पेशों को वह सामाजिक प्रतिष्ठा शायद ही मिलती है जो सिविल सेवा से जुड़ी छवि को प्राप्त होती है। यह असंतुलन युवाओं के करियर विकल्पों को भी प्रभावित

करता है। कई प्रतिभाशाली छात्र केवल सामाजिक अपेक्षाओं के कारण वर्षों तक यू.पी.एस.सी. की तैयारी में लगे रहते हैं, जबकि उनकी क्षमता अन्य क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय योगदान दे सकती है। यह भी एक कठोर सच्चाई है कि लाखों अभ्यर्थियों में से केवल कुछ ही इस परीक्षा में अंतिम रूप से सफल हो पाते हैं। बाकी अभ्यर्थियों के लिए यह प्रक्रिया कई बार लंबी और मानसिक रूप से कठिन साबित होती है। कुछ छात्र पाँच-छह वर्ष तक लगातार प्रयास करते हैं। इस दौरान उनकी उम्र, आर्थिक संसाधन और कई बार व्यक्तिगत संबंध भी प्रभावित होते हैं। असफलता की स्थिति में उन्हें यह महसूस कराया जाता है मानो उनका संघर्ष व्यर्थ हो गया हो।

वास्तव में यह दृष्टिकोण ही सबसे बड़ी समस्या है। किसी परीक्षा में सफलता या असफलता किसी व्यक्ति की संपूर्ण क्षमता या मूल्य का निर्धारण नहीं कर सकती। यू.पी.एस.सी. एक महत्वपूर्ण परीक्षा अवश्य है, लेकिन यह जीवन की संभावनाओं का अंतिम दरवाजा नहीं है। समाज के रूप में हमें यह समझना होगा कि सफलता के अनेक रास्ते होते हैं। यदि हम

विडंबना यह है कि जिन अधिकारियों को देश की विविध जनता के साथ काम करना होता है, वही जनता प्रायः अपनी स्थानीय भाषाओं में सोचती और बोलती है। हिंदी, भोजपुरी, मैथिली, अवधी या अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संचार का माध्यम ही नहीं बल्कि सामाजिक अनुभवों की अभिव्यक्ति भी हैं। यदि चयन की प्रक्रिया में भाषाई असमानता का अनुभव बढ़ता है, तो यह चिंता का विषय होना चाहिए। इसके साथ ही हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि देश का निर्माण केवल प्रशासनिक सेवाओं से नहीं होता। आज भारत की प्रगति में वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, उद्यमियों, शिक्षकों, डॉक्टरों और तकनीकी विशेषज्ञों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले हजारों युवा देश की डिजिटल संरचना को मजबूत बना रहे हैं। स्टार्ट-अप जगत में नए विचार किसानों, छोटे व्यापारियों और आम नागरिकों की समस्याओं के समाधान खोज रहे हैं। फिर भी इन पेशों को वह सामाजिक प्रतिष्ठा शायद ही मिलती है जो सिविल सेवा से जुड़ी छवि को प्राप्त होती है। यह असंतुलन युवाओं के करियर विकल्पों को भी प्रभावित

करता है। कई प्रतिभाशाली छात्र केवल सामाजिक अपेक्षाओं के कारण वर्षों तक यू.पी.एस.सी. की तैयारी में लगे रहते हैं, जबकि उनकी क्षमता अन्य क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय योगदान दे सकती है। यह भी एक कठोर सच्चाई है कि लाखों अभ्यर्थियों में से केवल कुछ ही इस परीक्षा में अंतिम रूप से सफल हो पाते हैं। बाकी अभ्यर्थियों के लिए यह प्रक्रिया कई बार लंबी और मानसिक रूप से कठिन साबित होती है। कुछ छात्र पाँच-छह वर्ष तक लगातार प्रयास करते हैं। इस दौरान उनकी उम्र, आर्थिक संसाधन और कई बार व्यक्तिगत संबंध भी प्रभावित होते हैं। असफलता की स्थिति में उन्हें यह महसूस कराया जाता है मानो उनका संघर्ष व्यर्थ हो गया हो।

वास्तव में यह दृष्टिकोण ही सबसे बड़ी समस्या है। किसी परीक्षा में सफलता या असफलता किसी व्यक्ति की संपूर्ण क्षमता या मूल्य का निर्धारण नहीं कर सकती। यू.पी.एस.सी. एक महत्वपूर्ण परीक्षा अवश्य है, लेकिन यह जीवन की संभावनाओं का अंतिम दरवाजा नहीं है। समाज के रूप में हमें यह समझना होगा कि सफलता के अनेक रास्ते होते हैं। यदि हम

युवाओं को केवल एक ही मार्ग को सर्वोच्च बताकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे, तो अनजाने में हम उनका संभावनाओं को सीमित कर देंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम यू.पी.एस.सी. जैसी परीक्षाओं का सम्मान करते हुए भी उन्हें जीवन का एकमात्र लक्ष्य न बनने दें। युवाओं को यह भरोसा दिया जाना चाहिए कि उनकी मेहनत, उनकी प्रतिभा और उनका योगदान किसी एक परिणाम से कम नहीं हो जाता।

हर पेशे की अपनी गरिमा है और हर जिम्मेदारी का समाज में अपना महत्व है। यदि हम यह संतुलित दृष्टिकोण विकसित कर पाए, तो न केवल युवाओं पर अनावश्यक दबाव कम होगा बल्कि देश को विविध क्षेत्रों में प्रतिभाशाली और समर्थित नागरिक भी मिलेंगे। अंततः यह याद रखना चाहिए कि किसी भी परीक्षा का परिणाम केवल एक अवसर तय करता है, किसी व्यक्ति का मूल्य नहीं। जीवन की संभावनाएँ उससे कहीं व्यापक होती हैं—और वही संभावनाएँ किसी समाज की वास्तविक ताकत होती हैं।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान),

झारखंड की दशा एवं दिशा पर कोल्हान रक्षा संघ के सम्मेलन में जुटे झारखंड - ओडिशा के आदिवासी



जमीन दाताओं को फेवरी की लाभ में हिस्सा, मानकी, ग्राम प्रधानों की मानदेय वृद्धि, आठवीं अनुसूची में 'हो' की मांग उठी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची: सरायकेला चाईबासा मार्ग पर सांगाजाटा फुटबॉल मैदान में झारखंड का दशा और दिशा विषय को लेकर कोल्हान रक्षा संघ का एक सम्मेलन

आयोजित किया गया गया जहां तीनों सिंहभूम के कोने कोने से आये लोग समेत ओडिशा से भी आदिवासी पहुंचे थे. इस सम्मेलन की अध्यक्षता कोल्हान रक्षा संघ के अध्यक्ष सह झारखंड प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी डिबार जॉकों ने की. जहां कोल्हान रक्षा संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्व. के.सी. हेन्रम के भतीजा मानसिंह हेन्रम, महासचिव कोल्हान रक्षा संघ समेत झारखंड बार कैन्सिल के अधिवक्ता, ट्रायबल एडवाइजरी कार्डिसिल के सदस्य, मानकी, मुंडा, माझी परगना समेत गणमान्य लोग उपस्थित रहे.

अध्यक्ष डिबार जॉकों ने अपने संबोधन में कोल्हान की मूल समस्याओं पर उद्गार व्यक्त करे हुए कहा भारत की संविधान की आठवीं अनुसूची में हो भाषा को शामिल कराने की जोर देना हमारी प्राथमिकता रहेगी जिसके लिए सभी को एक मंच पर आकर अपनी भाषा संस्कृति को संरक्षित करना होगा.

उन्होंने मानकी मुंडा के वर्षों से बलवित मानदेय भुगतान पर चिंता जाहिर करते हुए कहा सरकार अविश्वसनीय मानदेय प्रदान करे. साथ ही मानकी मुंडा परगनाओं को 15 हजार रूपए प्रतिमाह, मुंडाओं माझी बाबा, ग्राम प्रधानों को प्रतिमाह 10 हजार तथा दिउरी व पुजारी, डाकुआ को 5 हजार रूपए प्रतिमाह मानदेय दिया जाय. उन्होंने कहा झारखंडी जमीन पर रयतदारों से जमीन लेकर उद्योग बसाने वाले उन्हें अपनी कमाई का हिस्सा प्रदान करें. अन्यथा जमीनधारी को 'Tenant' से वापस मिले. उन्होंने समता जजमेंट को झारखंड के जमीन पर लागू करने की बात कही जिसमें दुध का दुध और पानी का पानी हो जायेगा. साथ ही पांचवीं अनुसूची कानून में तदनुसार कानून को तैयार कर लागू करें सरकार नती को आदिवासी हित के नाम पर विचारिए की साम्राज्य जस का तस चलता रहे.

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता कौशलेंद्र प्रताप ने आदिवासी अधिकारों पर जानकारी देते हुए कहा कि आप लोगों को एकत्रित होकर अपनी अधिकार व पांचवीं अनुसूची के लिए बड़ी व लंबी लड़ाई लड़नी होगी. चाईबासा बार कार्डिसिल के अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद ने अपने अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक किया.

ट्रायबल एडवाइजरी कार्डिसिल के मेंबर जोसाई माडी ने युवाओं को और अधिक एकजुट होकर लड़ाई लड़ने की बात कही. माझी परगना, महाल के

देश परगना नवीन मूर्मु ने कहा की आदिवासी समाज को एकजुट होकर कोल्हान का मालिक बनना होगा. कोल्हान रक्षा संघ के केंद्रीय सदस्य दुर्गा हेन्रम ने कहा कि पांचवी अनुसूची का अनुपालन पांचवी अनुसूची के तहत कभी नहीं किया गया. आदिवासी समाज को जागरूक होकर यहां के प्राकृतिक संपदा पर काबिज होना पड़ेगा.

सम्मेलन में गांव गांव जाकर कोल्हान रक्षा संघ के द्वारा जागरूकता अभियान चलाने व समाज के लोगों को एकजुट करने का निर्णय लिया गया. साथ ही कोल्हान के अन्य स्थानों पर भी इस तरह का महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा. सम्मेलन में स्वागत भाषण महासचिव मानसिंह हेन्रम ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन परेश नायक ने इलाके की भाषा ओडिया भाषा में दिया. मौके पर अध्यक्ष डिबार जॉकों, अधिवक्ता कौशलेंद्र प्रसाद, विश्वनाथ सिंह सरदार, जसाई माडी, सुरेश सोय, बागुन बोदरा, डोबरो बिरुली, नवीन मूर्मु, राजाराम हांसदा, कार्तिक कुमार परिच्छा, कृष्ण सामद, रामेश्वर प्रसाद, रविंद्र मंडल, धनपति सरदार, सुमित्रा जॉकों, जयसिंह, अधिवक्ता पुनम हेन्रम, सुखदेव हेन्रम, भीम सिंह हेन्रम, रथुनाथ लागुरी, सिद्धेश्वर संवैया, हरिश संवैया, लक्ष्मण मंडल, परेश नायक व दुर्गा हेन्रम समेत भारी संख्या में सिद्धभूम ओडिशा के अनेक गांव से आये लोग उपस्थित थे.

जितनी जल्दी अमेरिका, भारत के कूटनीतिक संदेशों को समझ लेगा, उसकी तिलमिलाहट दूर हो जाएगी!

कमलेश पांडेय

वैश्विक सम्बन्धों को नया आयाम देने वाले रायसीना डायलॉग 2026 में अमेरिकी उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडी के एक बेबाक से अब यह बात साफ हो चुकी है कि जब भारत के दोस्त अमेरिका जैसे हों, तो उसे बर्बाद होने के लिए चीन जैसे आसतन के सांपों की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तब शायद यूरोप और रूस मिलकर भी भारत को न बचा पाएँ। ऐसा इसलिए कि जो जहर ब्रिटेन और अमेरिका जैसे साम्राज्यवादी देशों के दिलोदिमाग में भरा हुआ है, उससे न तो ब्रिटेन का कल्याण हुआ, न ही अमेरिका का होगा। हां, इनकी क्षुद्र चालों से भारतीय उपमहाद्वीप और अरब-खाड़ी देशों में भयंकर धार्मिक कलह पैदा होगी। हालांकि भारत सरकार भी इन विदेशों हारामखोर चालों से सावधान है और जो जवाबी कूटनीतिक मोचबंदी करती जा रही है, वैसी भांग्या वसुंधरा की तर्ज पर वसुधैव कुटुम्बकम और सर्वे भव्यो सुखिनः को धार पर अग्रसर है। समकालीन कलह के लिए अमेरिका-यूरोप की साम्राज्यवादी शह-मात के खेल जिम्मेदार हैं। इसमें जिस तरह से अरब व खाड़ी देश पिस रहे हैं, यूक्रेन से लेकर ईरान तक बर्बादी ही बर्बादी नजर आ रही है, वह भारतीय कूटनीतिक के लिए एक अलग ही चुनौती पैदा करती जा रही है। लेकिन हमारी जैन-जैड पीढ़ी इतनी जांबाज और कार्यकुशल है कि निकट भविष्य में एक मजबूत भारत का डंडा पीट देगी और दुनिया के मुल्क देखते रह जाएंगे।



होगा, न कि दूसरों की गलतियों पर निर्भर रहकर। इसे अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक बयानबाजी में नहलने पर दहले की तरह लिया गया और इसपर भीतर बहस छिड़ी हुई है। अमेरिकी उपविदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडी ने रायसीना भारत में चेतावनी दी कि अमेरिका भारत को वह आर्थिक लाभ नहीं देगा जो उसने चीन को दिए थे, क्योंकि इससे चीन वैश्विक प्रतिद्वंद्वी बन गया। उनका यह बयान भारत-अमेरिका आर्थिक संबंधों पर सवाल उठाता प्रतीत होता है। भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर ने उनके ईर्ष्यालु बयान के दो दिन बाद दो टूक शब्दों में साफ-साफ कहा कि, हमें हमारी ताकत से निर्धारित होगा, न कि दूसरों की गलतियों से। इन्होंने हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की केंद्रीय भूमिका पर जोर दिया, और इशारा किया कि यहां सहयोग करने वालों को ही अधिक लाभ मिलेगा। यह वैश्विक कूटनीतिक संदेश है जो वैश्विक संघर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप के प्रभुत्वशाली देश भारत के अंतरराष्ट्रीय महत्व को उजागर करता है। अमेरिका जैसे देश भारत की गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता की अडिग नीति बौखलाहट दिखा रहा है, जो

खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं। 2026 में अमेरिकी उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडी के बयान पर भारत के विदेश उदय अपनी आंतरिक शक्ति से होगा। उन्होंने देगा जो उसने चीन को दिए थे, क्योंकि इससे चीन वैश्विक प्रतिद्वंद्वी बन गया। उनका यह बयान भारत-अमेरिका आर्थिक संबंधों पर सवाल उठाता प्रतीत होता है। भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर ने उनके ईर्ष्यालु बयान के दो दिन बाद दो टूक शब्दों में साफ-साफ कहा कि, हमें हमारी ताकत से निर्धारित होगा, न कि दूसरों की गलतियों से। इन्होंने हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की केंद्रीय भूमिका पर जोर दिया, और इशारा किया कि यहां सहयोग करने वालों को ही अधिक लाभ मिलेगा। यह वैश्विक कूटनीतिक संदेश है जो वैश्विक संघर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप के प्रभुत्वशाली देश भारत के अंतरराष्ट्रीय महत्व को उजागर करता है। अमेरिका जैसे देश भारत की गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता की अडिग नीति बौखलाहट दिखा रहा है, जो

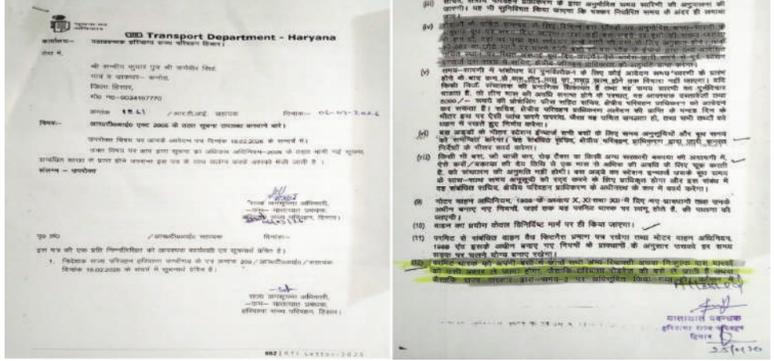
उल्लेखनीय है कि विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 2025 में रूस यात्रा के दौरान एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में दो टूक शब्दों में अमेरिकी विदेश नीति को र्पेपरलेक्सेड (perplexed) / (कन्फ्यूजिंग) या समझ से परे) कहा। इसका कारण स्पष्ट करते हुए जयशंकर ने बताया कि अमेरिका ने पहले अमेरिकी चेतावनी को खारिज करते हुए भारत की स्वतंत्र क्षमताओं पर भरोसा जताया। यह जवाब रायसीना डायलॉग के सत्रों के दौरान आया, जहां जयशंकर ने वैश्विक साझेदारियों पर भारत की रणनीति रेखांकित की। उल्लेखनीय है कि विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 2025 में रूस यात्रा के दौरान एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में दो टूक शब्दों में अमेरिकी विदेश नीति को र्पेपरलेक्सेड (perplexed) / (कन्फ्यूजिंग) या समझ से परे) कहा। इसका कारण स्पष्ट करते हुए जयशंकर ने बताया कि अमेरिका ने पहले अमेरिकी चेतावनी को खारिज करते हुए भारत की स्वतंत्र क्षमताओं पर भरोसा जताया। यह जवाब रायसीना डायलॉग के सत्रों के दौरान आया, जहां जयशंकर ने वैश्विक साझेदारियों पर भारत की रणनीति रेखांकित की।

(क्योंकि ऐसा चीन है) और न ही एलएनजी (LNG) का (क्योंकि ऐसे यूरोपीय देश हैं), फिर भी भारत पर विशेष रूप से टारगेट क्यों? यह अमेरिकी नीति उनकी समझ से बाहर थी।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि भारत के प्रति अमेरिका का नजरिया पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है, बल्कि दोनों देशों के बीच मजबूत रणनीतिक साझेदारी है, लेकिन व्यापार, भू-राजनीति और परेल्ड नीतियों पर मतभेद तनाव पैदा करते हैं। इससे व्यापारिक विवाद पैदा होते हैं। ट्रेड प्रशासन ने भारत के रूसी तेल खरीद पर जो 25% टैरिफ लगाया था, उसे भारत ने अपनी संप्रभुता का उल्लंघन बताया। चूंकि अमेरिका भारत से डेयरी और कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम करने की मांग करता रहा है, लेकिन भारत ने अपने स्थानीय हितों की रक्षा की है, इसलिए अमेरिकी बौखलाहट स्वाभाविक है।

जहां तक भू-राजनीतिक मतभेद की बात है तो भारत के रूस और ईरान से रक्षा व ऊर्जा संबंध अमेरिका को चिंतित करते हैं, जिसके कारण अमेरिकी की धमकियां दी गईं। वहीं ऐतिहासिक रूप से 1974-98 के परमाणु परीक्षणों पर अमेरिका ने कई प्रतिबंध लगाए थे। उसकी मानवाधिकार चिंताएं भी गैरवाजिब हैं क्योंकि अमेरिकी रिपोटर्स में भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों, पत्रकारों और असहमतियों पर 'गंभीर उल्लंघन' की आलोचना की गई। वहीं खालिस्तानी मुद्दे और आंतरिक राजनीति पर भी बयानाबाजी ने तनाव बढ़ाया। इससे अमेरिका को कुछ नहीं हासिल होने वाला है क्योंकि उसके यूरोपीय मित्र तक उससे दूर जाने की राह तलाश रहे हैं। भारत-यूरोपीय संघ के नजदीक आने की एक वजह यह भी है। इसकी खिसियाहट में अमेरिका ने बनेजुएला और ईरान के राष्ट्रपतियों के साथ जो सुलूक किए, उससे उसकी वैश्विक दंबाई भले बढ़ी, लेकिन भारत में एक कहावत है कि हर गुंडा 12 वर्षों के उत्पात के बाद मारा जाता है। शायद रूस-चीन का शह पाकर मुस्लिम देशों का संघ ओआईसी भी अमेरिका के साथ कुछ यही करे। यह उसके लिए बहुत बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना होगी और इससे यूरोपीय वैभव लौट सकता है। भारत के लिए यह न तो सुखद न ही दुःखद स्थिति होगी।

प्राइवेट बस में भी मान्य है छात्रों के निःशुल्क/रियायती बस पास



नियमों को ताक पर रखकर निजी संचालक करते हैं मनमानी मांगी गई आरटीआई से हुआ खुलासा

चण्डीगढ़/हिसार/नई दिल्ली सामाजिक कार्यकर्ता संदीप रोहलन ने हरियाणा में निजी बसों में छात्रों तथा अन्य रियायती बधा निःशुल्क पास से यात्रा के लिए अड़ा खुलासा किया है, उन्होंने एक आरटीआई निदेशक राज्य परिवहन हरियाणा चंडीगढ़ को भेजकर निजी बसों में छात्रों तथा अन्य रियायती बसों में निःशुल्क पास धारकों से सम्बंधित सूचना मांगी थी। निदेशक राज्य परिवहन हरियाणा चंडीगढ़ कार्यालय के पत्र क्रमांक:-

209/आरटीआई/सहायक दिनांक:- 16.02.2026 के संदर्भ में महाप्रबंधक हरियाणा राज्य परिवहन हिसार के पत्र क्रमांक:-1261 /आरटीआई/सहायक दिनांक:-06.03.2026 के तहत मिली जानकारी के बिंदु नंबर 12 में यह स्पष्ट किया गया है कि परमिट धारक को अपनी बसों में छात्रों तथा अन्य रियायती अथवा निःशुल्क पास धारकों को उसी प्रकार ले जाना होगा, जैसे कि हरियाणा रोडवेज की बसें ले जाती है, अथवा जैसा निजी बसों में छात्रों तथा अन्य रियायती बसों में निःशुल्क पास धारकों से सम्बंधित सूचना मांगी थी। निदेशक राज्य परिवहन हरियाणा चंडीगढ़ कार्यालय के पत्र क्रमांक:-



जाएगी, क्योंकि ऐसी निजी संचालकों के लिए यात्री कर की दरें नियत करते समय इस बिंदु के विचारों प्रभावों को ध्यान में रखा गया है। सामाजिक कार्यकर्ता संदीप रोहलन

रास चुनाव में शारदा नायक के वोट पर नजर! 2019 के समर्थन का 'कर्ज' चुकाने को लेकर चर्चा

राजनीतिक हलकों में अटकलों के बीच चुप्पी पर उठे सवाल

राउरकेला: आगामी 16 मार्च के राज्यसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। इस बीच राउरकेला विधानसभा क्षेत्र की राजनीति एक बार फिर चर्चा का केंद्र बन गई है। सवाल यह उठ रहा है कि क्या वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में पूर्व केंद्रीय मंत्री दिलीप राय के समर्थन से मिली सफलता का 'कर्ज' वर्तमान विधायक शारदा नायक राज्यसभा चुनाव में उसके पक्ष में मतदान के जरिए चुकाएंगे।

राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरे दिलीप राय को राउरकेला विधायक का समर्थन मिल सकता है। 2019 के विधानसभा चुनाव में दिलीप राय का समर्थन निर्णायक माना गया था, जिसने वर्तमान



विधायक को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। ऐसे में अब जब दिलीप राय राज्यसभा चुनाव में हैं, तो राजनीतिक समीकरणों को लेकर कयास तेज हो गए हैं।

स्थानीय राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि यह चुनाव केवल संसदीय प्रक्रिया नहीं है, बल्कि पुराने राजनीतिक संबंधों और रणनीतिक समीकरणों की परीक्षा भी है। विधायक शारदा नायक का एक वोट न केवल प्रतीकात्मक, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण

माना जा रहा है। हालांकि इस मुद्दे पर संबंधित विधायक या दिलीप राय की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन राजनीतिक चर्चाओं का बाजार गर्म है। मतदाताओं और समर्थकों में यह सवाल प्रमुख है कि विधायक अपने पुराने राजनीतिक सहयोग का सम्मान करेंगे या खूब सम्मान पर स्थितियों के आधार पर अलग निर्णय लेंगे।

राज्यसभा चुनाव की तिथि

नजदीक आने के साथ राउरकेला का यह राजनीतिक समीकरण पूरे प्रदेश की राजनीति में ध्यान का केंद्र बना हुआ है। बत्ता दे की भले ही बीजद सरकार की हनक व प्रभाव के साथ रची गई साजिश में वर्ष 2024 के चुनाव में भले ही आमने सामने की राजनीति में दिलीप राय से शारदा नायक चुनाव जीत गये, लेकिन दिलीप राय से वर्ष 1999 के विधान सभा चुनाव में शारदा को समर्थन मिलने से राज्य राजनीतिक में उन्हे जो पहचान मिली, उसका दीर्घ कालिक लाभ शारदा नायक को मिला और कांग्रेस में भी दोनों नेता साथ रहे हैं। व्यक्तिगत तौर पर शारदा नायक पूर्व केंद्रीय नेता राजनीतिक के सुरंहर दिलीप राय का खूब सम्मान करते हैं, ऐसे सब की नजर विधायक शारदा नायक की वोट व उनकी चुप्पी पर है।

आरम्भ सेवा संस्थान द्वारा पॉलिटेक्निक कॉलेज में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा तिलक नगर स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में आरम्भ सेवा संस्थान नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र, भीलवाड़ा द्वारा एक दिवसीय नशा मुक्ति जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यशाला में कॉलेज के विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं कॉलेज प्रशासन के प्रतिनिधियों द्वारा द्वीप प्रचलन के साथ किया गया। संस्थान प्रमुख विशाल खंडेलवाल ने कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को नशे के



दुष्परिणाम, उसके शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों तथा उससे बचाव के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया गया।

खंडेलवाल ने कहा कि नशा आज समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। विशेष रूप से युवा वर्ग इसके प्रभाव में तेजी से आ रहा है, जिससे उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और भविष्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

कॉलेज प्रबंधन की ओर से प्रकाश चौधरी एवं राकेश अग्रवाल कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया।

आर्कषण का केन्द्र बनी महिला चित्र प्रदर्शनी बेटियाँ किस्मत वालो के घर में पैदा होती है - पदमश्री जानकीलाल भांड

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा स्थानीय आकृति कला संस्थान भीलवाड़ा द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के अवसर पर दिनांक 7 से 12 मार्च 2026 तक आयोजित कला प्रदर्शनी के तीसरे दिन कलाप्रेमियों की खासी भीड़ रही।

जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव कैलाश पालिया ने बताया कि इस प्रदर्शनी में शहर की वरिष्ठ चित्रकार श्रीमती मंजु मिश्रा द्वारा निर्मित 'प्राकृतिक लैण्डस्केप' गीलाजिल वर्मा द्वारा भारतीय पौष्पाणिक विषयों में नारी ज्योति पारीक द्वारा ज्योति पारीक प्रकृति एवं पुरुष का सौन्दर्य डॉ. हेमन्ता मीणा व नैहा सोनी द्वारा वूडकट में नारी मन, अनु प्रजापत द्वारा मधुबनी व फुडशैली में नारी मालविका अग्रिमित्र' अनुष्का पारालार द्वारा 'मधुबनी में नारी सौन्दर्य' झलकरानी द्वारा भीलवाड़ा 'पुराने शहर की हवेलियों' बालकार भूवि पेंसवान की 'बालमन की



अठखेलियाँ' स्नेहा ओस्त्वाल द्वारा मार्डन आर्ट कलाप्रेमियों को लुभा रही है।

बेटियों की कृतियों पर भावुक हुईं माताएँ...

आज की सामाजिक सोच एवं बेटी की चाहत वाली दुनियाँ में बेटियों की कला और उनकी उपलब्धियों को देखकर माताओं की आँखें भर आयी और उन्होंने कहा कि आज हमारा नाम बेटियों की वजह से जाना जाता है। आकृति कला संस्थान की पहल

की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज के युग में हम सब डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक तो बना रहे हैं लेकिन हमारी संस्कृति हमारी कलाओं में नजर आती है। हमारी बेटियाँ कला के क्षेत्र में निरन्तर होटल में जबर्दस्ती बंधक बना लिया और पीटा। उसने उस पर धर्मबदलने का भी दबाव बनाया और उसे कर्नाटक ले जाने की कोशिश की। जब युवती ने धर्मबदलने से मना कर दिया, तो उसने उसे फिर से पीटा और बहुत ज़्यादा टॉर्चर किया। युवती ने शहीदनगर पुलिस स्टेशन में फोन करके जानकारी दी। युवती की लिखी हुई शिकायत के आधार पर पुलिस ने केस नंबर 133/26 दर्ज किया और इरफान को गिरफ्तार कर लिया। इरफान पर शादी का वादा करके रेप करने, जबर्दस्ती धर्मबदलने और टॉर्चर करने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए। बेल खारिज होने के बाद उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या इरफान ने पहले भी किसी और युवती को लव जिहाद में फंसाया है।

मुस्लिम लड़के ने हिंदू लड़की को धोखा दिया

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : एक हिंदू लड़की को एक मुस्लिम आदमी ने धोखा दिया है। उस आदमी ने पहले लड़की को यह बताए बिना उससे प्यार किया कि वह मुस्लिम है। बाद में, उसने उसके साथ फिजिकल रिलेशन बनाए और उसे इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर किया। उस आदमी ने लड़की को राजधानी भुवनेश्वर के एक होटल में भी रखा, उसे टॉर्चर किया और उसे राज्य से बाहर समाल करने का प्लान बनाया। ऐसी ही एक गंभीर शिकायत शहीदनगर थाना इलाके से आई है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने होटल में छापा मारकर लड़की को छुड़ाया और आरोपी इरफान अंसारी को गिरफ्तार कर लिया। इसके अलावा, होटल से कई नकली ID, एक तलवार और दूसरे खतरनाक हथियार भी जब्त किए गए। पुलिस की जानकारी के मुताबिक, आरोपी इरफान अंसारी का घर कर्नाटक में है। पीड़िता का घर भद्रक में है, जब वह चेन्नई के एक होटल में काम कर रही थी,

तभी उसकी जान-पहचान इरफान से हुई। इरफान ने अपनी असली पहचान छिपाई और खुद को जयमराम शर्मा और हिंदू बताकर संबंध बनाए। इरफान ने उसे उस होटल में भी रखा, जहां लड़की काम करती थी और उसे प्यार के जाल में फंसाया। आखिर में, उसने उसे शादी कालालचंदिया और बार-बार शारीरिक संबंध बनाए। कुछ दिन पहले, आरोपी लड़की को पुरी ले आया और होटल में रखा। इसी दौरान लड़की को उसकी असली पहचान पता चली। यह जानने के बाद कि जयमराम शर्मा है और उसका असली नाम इरफान है, दोनों आरोपी इरफान अंसारी को गिरफ्तार कर लिया। इसके अलावा, होटल से कई नकली ID, एक तलवार और दूसरे खतरनाक हथियार भी जब्त किए गए। पुलिस की जानकारी के मुताबिक, आरोपी इरफान अंसारी का घर कर्नाटक में है। पीड़िता का घर भद्रक में है, जब वह चेन्नई के एक होटल में काम कर रही थी,



इरफान के कई पहचान पत्र देखने के बाद उनमें बहस हो गई। उसने भागने की कोशिश की, लेकिन इरफान ने उसे होटल में जबर्दस्ती बंधक बना लिया और पीटा। उसने उस पर धर्मबदलने का भी दबाव बनाया और उसे कर्नाटक ले जाने की कोशिश की। जब युवती ने धर्मबदलने से मना कर दिया, तो उसने उसे फिर से पीटा और बहुत ज़्यादा टॉर्चर किया। युवती ने शहीदनगर पुलिस स्टेशन में फोन करके जानकारी दी। युवती की लिखी हुई शिकायत के आधार पर पुलिस ने केस नंबर 133/26 दर्ज किया और इरफान को गिरफ्तार कर लिया। इरफान पर शादी का वादा करके रेप करने, जबर्दस्ती धर्मबदलने और टॉर्चर करने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए। बेल खारिज होने के बाद उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या इरफान ने पहले भी किसी और युवती को लव जिहाद में फंसाया है।

बिहार की राजनीति के नए मोड़ पर लोकतंत्र की कसौटी

डॉ. विक्रम चौरसिया

बिहार की राजनीति इन दिनों एक नए मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है। लंबे समय से राज्य का नेतृत्व कर रहे माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल करने के बाद यह सवाल तेज हो गया है कि उनके बाद बिहार का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा ?

कई लोगों का मानना है कि जनता ने भारी बहुमत देकर मुख्यमंत्री बनाया इसलिए उनके राज्यसभा जाने की स्थिति में स्वाभाविक रूप से नेतृत्व को लेकर चर्चा होना तय है। राजनीतिक गलियारों में यह भी चर्चा है कि उनके पुत्र निशांत कुमार सक्रिय राजनीति में भूमिका निभा सकते हैं, जबकि गठबंधन में शामिल बीजेपी की ओर से भी संभावित नेतृत्व को लेकर चर्चाएं चल रही हैं।

यह बहस केवल सत्ता परिवर्तन की नहीं, बल्कि लोकतंत्र की मूल भावना से भी जुड़ी है। लोकतंत्र में यह



आवश्यक नहीं कि किसी नेता का पुत्र ही उसका उत्तराधिकारी बने; यहां नेतृत्व योग्यता, अनुभव और जनता के विश्वास के आधार पर तय होता है। यह भी याद रखने की आवश्यकता

है कि बिहार केवल एक राज्य नहीं, बल्कि विचार और ज्ञान की ऐतिहासिक धरती है। यही वह भूमि है जहां बुद्ध ने मानवता और करुणा का संदेश दिया, जहां आचार्य चाणक्य ने

आरम्भ सेवा संस्थान द्वारा पॉलिटेक्निक कॉलेज में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा तिलक नगर स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में आरम्भ सेवा संस्थान नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र, भीलवाड़ा द्वारा एक दिवसीय नशा मुक्ति जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यशाला में कॉलेज के विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं कॉलेज प्रशासन के प्रतिनिधियों द्वारा द्वीप प्रचलन के साथ किया गया। संस्थान प्रमुख विशाल खंडेलवाल ने कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणाम, उसके शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों तथा उससे बचाव के



उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया गया। खंडेलवाल ने कहा कि नशा आज

समाज के सामने एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। विशेष रूप से युवा वर्ग इसके प्रभाव में तेजी से आ रहा है, जिससे उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और भविष्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

कॉलेज प्रबंधन की ओर से प्रकाश चौधरी एवं राकेश अग्रवाल कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया।

एम्प्रेस क्लब द्वारा शहर की पहली महिला रिक्शा चालक सहित 150 से अधिक महिलाएं सम्मानित

डॉ. शंभु पवार

नई दिल्ली, 9 मार्च। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एम्प्रेस क्लब जयपुर, द्वारा एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। एम्प्रेस क्लब की संस्थापिका खुशबू भारद्वाज ने बताया कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली 150 से अधिक महिलाओं को सम्मानित किया गया। समारोह में अतिथि के रूप में मनोज मुद्गल, बलविंदर वालिया तथा नारायणा हॉस्पिटल की टीम उपस्थित रही। समारोह में शहर की पहली महिला रिक्शा चालक हेमलता भारद्वाज को विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिनकी संघर्षपूर्ण यात्रा अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। इसके अतिरिक्त कुसुम, रिया, अदिति, प्रियंका, शोतल, पल्लवी, प्रियंका



बजाज, अमृता और शिप्रा सहित महिलाओं को समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। हेल्थ ओके की ओर से अनिल जी ने भी सहभागिता निभाई और सभी सम्मानित महिलाओं को स्वास्थ्य से जुड़े विशेष उत्पाद भेंट किए। वहीं नारायणा हॉस्पिटल की ओर से डॉ. पूनम गोयल ने महिलाओं के स्वास्थ्य और जागरूकता को लेकर महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी

सुझाव साझा किए। गुरु कुमार ने फूड पार्टनर के रूप में सहयोग दिया। एम्प्रेस क्लब द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण को समर्पित रहा, कार्यक्रम में नारी शक्ति, आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रेरणा का सशक्त संदेश देने के लिए महिलाओं को बाड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी ने आयोजन को सफल और प्रेरणादायक बना दिया।

ओ-हब में स्टार्ट-अप कॉन्फ्रेंस हुई

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: राज्य सरकार स्टार्ट-अप एंटरप्रेन्योरों के सपनों और विजन को पूरा करने के लिए तैयार है। अगर हमारे स्टार्ट-अप और मजबूत होंगे, तो राज्य सुशाहली की ओर बढ़ सकता है। इसलिए, युवाओं को स्टार्ट-अप शुरू करने के लिए आगे आना चाहिए, ऐसा माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइज मंत्री श्री गोकुलानंद मल्लिक ने कहा। आज, वे लोकल ओ-हब में आयोजित स्टार्ट-अप कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए और युवा एंटरप्रेन्योरों की हिम्मत बढ़ाई। इस प्रोग्राम में, माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइज डिपार्टमेंट की कमिश्नर और एडमिनिस्ट्रेटिव सेक्रेटरी, रश्मिता पांडा ने अपनी वेलकम स्पीच में डिपार्टमेंट द्वारा दिए जाने वाले अलग-अलग फाइनैशियल इंसेंटिव्स के बारे में डिटेल्स में जानकारी दी। यह ध्यान देने वाली बात है कि स्टार्ट-अप एंटरप्रेन्योरों को मंथली अलाउंस ग्रांट, प्रोडक्ट डेवलपमेंट और मार्केटिंग अडिस्टेंस, और जरूरत के हिसाब से अडिस्टेंस जैसे तरीकों से फाइनैशियल इंसेंटिव्स दिए जा रहे हैं। माननीय मंत्री ने आज कॉन्फ्रेंस में 12 युवा स्टार्ट-अप एंटरप्रेन्योरों को फाइनैशियल इंसेंटिव्स दिए। डिस्टाई, ईगल AI, जयदेव नैसूरल फूड्स, इको साथ ग्रीन इंडिया, रेड्रो, शर्लक स्टूडियो को प्रोडक्ट डेवलपमेंट और मार्केटिंग सपोर्ट के लिए फाइनैशियल इंसेंटिव्स मिले, जबकि एस्ट्रोनेक्स्ट ने कॉन्फ्रेंस में अपने अनुभव और इनसाइट्स शेयर किए। यह ध्यान देने वाली बात है कि ओडिशा स्टार्टअप पॉलिसी के जरिए एंटरप्रेन्योरों को मजबूत बनाने के लिए फाइनैशियल मदद, मेंटरशिप, मार्केटिंग, नेटवर्किंग वगैरह जैसे कई मौके दिए जा रहे हैं।

आलोक कुमार मोहंती पब्लिक रिलेशन्स ऑफिसर

इतिहास के स्वर्णिम क्षण का साक्षी बना भारत

भारत के इतिहास में कभीकभी ऐसे अद्भुत और भावनात्मक अवसर आते हैं, जब पूरा राष्ट्र एक साथ खड़े, उल्लास और उत्सव की भावना से भर उठता है। ऐसा ही एक अनोखा और ऐतिहासिक क्षण उस समय देखने को मिला जब अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन भारत ने खेल के मैदान में ऐसी उपलब्धि हासिल की, जिसने पूरे देश को उत्सव के रंग में रंग दिया। रविवार की सुबह जहां देशभर में रंगपंचमी और होली के रंगों का उल्लास दिखाई दे रहा था, वहीं रात होते-होते यह उत्साह मानों दीपों के पर्व की तरह चमकने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक ही दिन में भारत ने होली भी मना ली और दिवाली भी।

यह केवल एक खेल प्रतियोगिता की जीत नहीं थी, बल्कि यह उस निरंतर परिश्रम, आत्मविश्वास और सामूहिक संकल्प की विजय थी, जिसने भारतीय क्रिकेट को विश्व मंच पर नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। जब किसी देश की टीम अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में लगातार सफलता प्राप्त करती है, तो वह केवल खेल का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह पूरे राष्ट्र की सामूहिक भावना, विश्वास और क्षमता का प्रतीक बन जाता है।

पिछले दो वर्षों के आंकड़ों पर यदि गंभीरता से दृष्टि डाली जाए तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि भारतीय क्रिकेट ने विश्व स्तर पर

असाधारण सफलता प्राप्त की है। लंबे समय तक एक ऐसा दौर भी रहा जब भारत की उपलब्धियाँ सीमित अंतराल में आती थीं, और एक बड़ी जीत के बाद वर्षों तक इंतजार करना पड़ता था। किंतु अब परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। भारतीय क्रिकेट ने नए युग में जिस निरंतरता और आत्मविश्वास के साथ सफलता अर्जित की है, उसने खेल जगत में भारत की प्रतिष्ठा को नई मजबूती प्रदान की है।

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में कुछ महत्वपूर्ण पड़ाव ऐसे रहे हैं जिनमें पूरे देश को गर्व से भर दिया। वर्ष १९८० में पुरुष एक दिवसीय विश्व कप की ऐतिहासिक जीत ने पहली बार भारत को विश्व क्रिकेट के मानचित्र पर सशक्त रूप से स्थापित किया। इसके बाद वर्ष २००७ में पुरुष टी२० विश्व कप की सफलता ने नए प्रारूप में भारत की क्षमता को प्रमाणित किया। वर्ष २०११ में पुरुष एक दिवसीय विश्व कप की जीत ने उस गौरवपूर्ण परंपरा को और सुदृढ़ किया और करोड़ों भारतीयों के सपनों को साकार किया।

किन्तु अब जो नया दौर सामने आया है, वह केवल एकदो उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि निरंतर सफलताओं का प्रतीक बन गया है। वर्ष २०२४ में पुरुष टी२० विश्व कप की विजय ने इस नए युग की शुरुआत को सुदृढ़ किया। इसके बाद वर्ष २०२५ में महिला

अंडर१९ विश्व कप की जीत ने यह सिद्ध किया कि भारत की नई पीढ़ी भी उतनी ही प्रतिभाशाली और दृढ़ निश्चयी है। इसी वर्ष चैंपियंस ट्रॉफी और महिला विश्व कप की उपलब्धियों ने भारतीय क्रिकेट की व्यापक शक्ति और संतुलन को उजागर किया।

इसके साथ ही वर्ष २०२६ में पुरुष अंडर१९ विश्व कप और पुरुष टी२० विश्व कप की सफलताओं ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया कि भारत केवल वर्तमान में ही नहीं, बल्कि भविष्य में भी विश्व क्रिकेट की अग्रणी शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह निरंतर सफलता किसी एक खिलाड़ी या एक टीम के प्रयास का परिणाम नहीं है, बल्कि यह पूरे खेल तंत्र, प्रशिक्षण व्यवस्था, युवा प्रतिभाओं और देश के अटूट समर्थन का संयुक्त परिणाम है।

भारतीय क्रिकेट की यह उपलब्धि इसलिए भी विशेष है क्योंकि इसमें पुरुष और महिला दोनों वर्गों को समान भागीदारी दिखाई देती है। यह उस बदलती सोच का प्रतीक है जिसमें खेल के क्षेत्र में महिलाओं को भी उतना ही सम्मान और अवसर मिल रहा है जितना पुरुषों को। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन मिली यह सफलता इस बात का सशक्त संदेश भी देती है कि भारत में खेल का भविष्य समावेशी, संतुलित और प्रेरणादायक है।

जब देश की टीम विश्व मंच पर विजय प्राप्त

करती है, तो वह केवल खिलाड़ियों की जीत नहीं होती। वह हर उस नागरिक की जीत होती है जिसने अपने मन में देश के लिए गर्व और उम्मीद को जीवित रखा है। यही कारण है कि ऐसी उपलब्धियों के अवसर पर पूरा राष्ट्र एक परिवार की तरह उत्सव मनाता है। कहीं मिठाइयां बांटी जाती हैं, कहीं पटाखों की गूँज सुनाई देती है और कहीं लोग एकदूसरे को गले लगाकर बधाइयां देते हैं।

आज का यह ऐतिहासिक अवसर हमें यह याद दिलाता है कि खेल संकल्प मजबूत हो, प्रयास निरंतर हो और लक्ष्य स्पष्ट हो, तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है। भारतीय क्रिकेट की यह यात्रा उसी विश्वास और समर्पण की कहानी है जिसने देश को बारबार गौरवान्वित किया है।

निस्संदेह, यह समय केवल उत्सव मनाने का ही नहीं बल्कि उस सामूहिक शक्ति को पहचानने का भी है जो भारत को निरंतर आगे बढ़ा रही है। यह उपलब्धियाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेंगी और उन्हें यह विश्वास देगी कि परिश्रम, अनुशासन और देशभक्ति के साथ कोई भी सपना असंभव नहीं होता। ऐसे गौरवपूर्ण क्षणों में हर भारतीय के मन से स्वाभाविक रूप से यही भावना निकलती है — हमें गर्व है कि हम भारतीय हैं।

अजय कुमार बियानी